मूल्य रु। ५-००

सलंग अंक ८७ जुलाई-२०१४

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख मासिक

वाली देश के गाँवो में प.पू. महाराजश्री के सांनिध्य में सत्संग सभा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

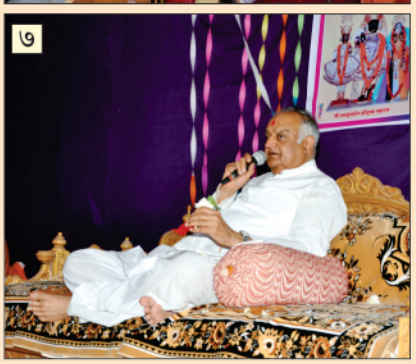

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव का प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से केशर स्नान का दर्शन । (२) अहमदाबाद रंग महल घनश्याम महाराज के नूतन कलश का पूजन करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री । (३) जेतलपुर बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री । (४) आई.एस.एस.ओ. के नये चेप्टर रिचमोन्ड में प.पू. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में सत्संग सभा । (५) अपने डिट्रोईट (अमेरिका) मंदिर में यज्ञ की आरती उतारते हुये संत तथा हरिभक्त । (६) आई.एस.एस.ओ. के नये चेप्टर जेक्शन विले में प.पू. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में सत्संग सभा में सत्संग कराते हुये पू. पी.पी. स्वामी तथा संत मंडल । (७) मूली मंदिर में नये यात्रिक भवन की खात विधि करने के बाद सभा में आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ८ ● अंक : ८७
जुलाई-२०१४

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	द्वितीय बदरिकाश्रम	०६
०४.	प्रसादी के पत्रों का आचमन	०८
०५.	अहिंसा - मनुष्य मात्र का सबसे बड़ा धर्म	०९
०६.	सेवा	११
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१२
०८.	सत्संग बालवाटिका	१४
०९.	भक्ति सुधा	१६
१०.	सत्संग समाचार	१९

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

भगवान के भक्त को स्त्री, धन, देहाभिमान तथा स्वभाव ए चार वानामां काच्यपहोयने ते भगवाननी भक्ति वरेली होय तो पण एनी भक्तिनो विश्वास नहीं, एनी भक्तिमां जरुर विघ्न आवे, केम जे, क्यारेक एने स्त्रीधननो योग थाय तो भक्तिनो ठा रहे नही ने तेमां आसक्त थई जाय तथा देहाध्यास होय तो ज्यारे देहमां रोगादिक कष्ट थाय तथा अन्न वस्त्रादिक न मले अथवा कोईक कठण वर्तमान पालवानी आज्ञा थाय त्यारे पण तेने भक्तिमां भंग थाय ते विकल थई जाय ने कांई विचार न रहे ने चाडा चूंथवा लागे तथा कोईक रीतनो स्वभाव होय तेने संत टोकवा मांडे ने ते स्वभाव प्रमाणे वर्तवा न दे, बीजी रीते वर्तावे त्यारे पण ए मूंझाय ने एने संतना समाजमां रहेवाय नही, त्यारे भक्ति ते क्यांथी रहे ? माटे जेने दृढ भक्ति इच्छवी होय तेने ए चार वाना मां काच्यप राखवी नही, ने ए चारनी काच्यप होय तो पण समजीने धीरे धीरे त्याग करवी । तो वासुदेव भगवाननी निश्चल भक्ति थाय । (ग.अं. ३३) इसलिये प्रिय भक्तजन हम भी इन चार प्रकार के ताना वाना का त्याग करेंगे तो ही भगवान अपनी भक्ति को स्वीकार करेंगे ।

आषाढ शुक्ल-१५ ता. १२-७-१४ गुरुपूर्णिमा महोत्सव के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के गुरुपूजन महोत्सव में तथा आषाढ कृष्ण-१० ता. २१-७-१४ को प.पू. लालजी महाराजश्री के १७ वें जन्मोत्सव प्रसंग पर देश-विदेश के सभी संत हरिभक्तों को पधारने के लिये हमारा स्नेहभरा निमंत्रण है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (जून-२०१४)

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर वाली (राजस्थान) देश के गाँव में सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर शेखपाट (स.गु. निष्कुलानंद स्वामी के जन्म स्थान मूली देश) के कात मुहुर्त प्रसंग पर पदार्पण।

१७ श्री हार्दिकभाई शाह के यहाँ पदार्पण, वासणा।

२० वाली (राजस्थान) देश के गाँव में सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर (बहनों के) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

प.भ. हिंमतभाई लक्कड के यहाँ पदार्पण, थलतेज।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२४ जून से ११ जुलाई-२०१४

अमेरिका के वोशिंग्टन डी.सी. एटलान्टा तथा बायरन श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर तथा आई.एस.एस.ओ. के अन्य चेप्टरो में सत्संग प्रचारार्थ विचरण।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री वृजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (मई-२०१४)

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया युवा सत्संग शिबिर अपने अध्यक्ष स्थान पर संपन्न किये।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर (बहनों के) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२७ जून से १४ जुलाई तक

अमेरिका वोशिंग्टन डी.सी. एटलान्टा तथा बायरन श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर बाल-युवा केम्प प्रसंग पर पदार्पण।

द्वितीय बदरिकाश्रम

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय में बालासिनोर, लुणावाडा, कोठंबा, कडाणा, गोठीब, संतरामपुर का विस्तार पंचमहाल विभाग झाडी देश कहा जाता है । इस देश में मुमुक्षुओं का उल्लेख तो मिलता ही है इसके अलांवा वृक्षों के रुप में भी मुक्त लोग अवतरित थे । यह तपोभूमि है । छपैया आते जाते रास्ते में यह स्थान आता है । उस में भी लुडावाला छोटा काशी कहा जाता है । श्रीजी महाराज संतो के मंडल को देश-विदेश भेंजते रहते थे। परंतु झाडी देश में तो बड़े बड़े संतो के मंडल को भेंजते थे । श्रीहरि इस क्षेत्र में पधारे नहीं थे फिर भी गोपालानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, निर्गुणदासजी स्वामी, प्रसादानंद स्वामी, महानुभावानंद स्वामी, लोकनाथानंद स्वामी, ब्र. स्वामी वासुदेवानंदजी, उत्तमानंदजी स्वामी, पवित्रानंदजी स्वामी, भगवदानंदजी स्वामी, हरिप्रकाशानंदजी स्वामी, सुखदातानंदजी स्वामी, शिवानंदजी स्वामी, जेराम ब्रह्मचारी जैसे पचीस संतो का मंडल इस क्षेत्र में निरन्तर विचरण करता रहता था । इसके अलांवा श्रीहरि के बड़े गुरुभाई रामदास स्वामी को भी महाराज इस क्षेत्र में भेंजे थे । झाडी देश का महाराज बहुत ध्यान रखते थे । जब संत विचरण करके वापस आते तो महाराज सभी से हाल समाचार पूछते थे । लूणावाडा में सर्व प्रथम स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी सं. १८६२ में पधारे और उसी समय सत्संग का बीजारोपड़ किये । वहाँ के प्रतापसिंह राजाने स्वामी के कवित्व शक्ति से प्रभावित होकर उनका स्वागत राजोचित ढंग से किया था । उसके बाद वहाँ के ब्राह्मण भी आकृष्ट हुए थे । स्वामीजी लूणेश्वर महादेव में निवास किये थे । वहाँ पर रहकर आनेवाले मुमुक्षुओं को भागवत धर्म का उपदेश करते थे । इसके अलांवा गाँव से दक्षिण में पानम नदी के किनारे कुमारेश्वर महादेव के मंदिर में रहे थे । वहाँ पर चातुरमास पूर्ण किये । यहीं पर स्वामीने "अमृतध्वनि छन्द की रचना की । स्वामीने असंख्य मुमुक्षुओं को महाराज का दिव्य दर्शन कराकर अन्तर का द्वार खोला । इसके बाद जेतलपुर का उत्सव पूर्ण हुआ और सगु. गोपालानंद स्वामी को श्रीहरिने झाडी देश में भेंजे । लूणावाडा को केन्द्र स्थान में रखर गाँवो में विचरण करके सत्संग कराते थे । लूणावाडा में मधवास दरवाजे पर कोशिया कूंआ के पास वृक्ष की छाया में निवास किये थे । इस समय वेरी नदी के किनारे रहने वाले पाटीदार महाराज के सत्संगी हुए थे । झाडी देश में सत्संग का प्रभाव बड़े-बड़े संत जब बढाये थे तो कुसंगी मत वाले सभी डर गये । वे सभी राजा के पास जाकर कहे कि मुक्तों का पंथ वैदिक नहीं है, उस समय राजाने सभा में शास्त्रार्थ रखा । उसमे श्रीहरिने स.गु. भगवदानंद स्वामी तथा शिवानंद स्वामी को लूणावाडा भेजे । विद्वत् सभा में ब्राह्मणोने १३ अटपटे प्रश्न पूछे, जिसका यथार्थ उत्तर संतोने किया । जिससे संप्रदाय की जयजयकार हुई । नास्तिक पंथी का मुख नीचे हो गये । उसी समय से राजाने ऐसा आदेश किया कि जीवन मुक्त स्वामी के पंथ को चारोवर्ण के लोग स्वीकार कर सकते हैं । श्रीहरिने उन दोनो संतो को बाहो में लेकर भेंटे और सद्गुरु की पदवी प्रदान किये ।

संवत् १८६५ में स.गु. रामदास स्वामी जो महाराज के बड़े गुरुभाई थे उन्हें तथा महानुभावानंद स्वामी को झाडी देश में भेजें । उन्होंने भगवान की महिमा समझाकर उपदेश दिया । उस समय कडाणा, लुणावाडा, संतरामपुर, बालासिनोर, गोठीब इत्यादि विस्तारो में एक-एक मुमुक्षु

के घर पधारकर श्रीजी महाराज के संदेश को प्रचारित किया।

सद्गुरु जेराम ब्रह्मचारी को श्रीजी महाराजने झाडी देश में भेंजा उस समय स्वामीने कहा कि इस प्रदेश में मनुष्य के रुप में मुक्तों का जन्म हुआ है। इतना ही नहीं बल्कि प्रत्येक वृक्ष के रुप में भी मुक्तों का अवतार हुआ है। स्वामी वारंवार कहते है कि यहाँ देश में वृक्ष के रुप में मुक्तलोग जन्म लिये हैं। उस समय से इसदेश का नाम झाडी देश प्रसिद्ध हुआ।

रास्ते में जाते हुए एक पलाश का वृक्ष देखकर स्वामी उसके आत्मा के सामने नजर किये और अपने कमंडलु में से जललेकर उसके ऊपर जल छिड़कर पंचवर्तमान धारण कराकर सत्संगी किये। स्वामी रास्ते में चलते समय अगल बगल देखते चलते उसमें कोई मुमुक्षु दिखाई देता तो उसे तुरंत पंचवर्तमान धारण कराते थे। किसी मुमुक्षु में थोडा बहुत कमी रहजाती तो झाडी देश के मुमुक्षुओं का दर्शन कराकर मुक्त करवा देते। माधवदासजी रचित हरिकृष्ण चरित्र सागर में ऐसे अनेक प्रसंग लिखा हुआ है। श्रीहरि संतो से कहते है कि वृक्षों का कल्याण होना आवश्यक है। क्योंकि वृक्ष ही इस देश की सत्संग वाटिका है। इसी कारण महाराज झाडी देश में बड़े-बड़े संतो को मंडल के साथ वारंवार भेजते रहते थे।

लुणावाडा के मुक्तराज लक्ष्मीरामजानी उत्तम कोटि के भक्तराज थे। दूसरे करुणाशंकर देराशरी कर्म कांडी नागर ब्राह्मण भक्त थे। उन्होंने जेतलपुर में जब यज्ञ हुआ उस समय तथा श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा के समय यज्ञ में उपरोक्त रुप में वर्णित हुए थे। इस के अलांवा गोठीब के कडवा भक्त तथा जिसने पचास जितने ग्रन्थों का प्रकाशन किया ऐसे रमणलाल भट्ट इत्यादि असंख्य मुक्त यहाँ पर प्रगट हुए। जिस तरह श्रीहरि के नंद संत, परमहंस ब्रह्मचारी झाडी देश में विचरण करते उसी समय आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराज छपिया की यात्रा में जाते थे। जिस में प्रथमवार १८६९ तथा १९०४ में एक एक मास लूणावाडा रुके थे। श्रीजी महाराज की तरह आदि आचार्य महाराजश्री ने झाडी देश के हरिभक्तों को अपने हृदय में स्थान देकर अमृतवर्षा की थी। गाँव-गाँव घर-घर पदार्पण करके सभी के घर को पावन किया था। सभी बड़े उत्साह के साथ स्वागत करते थे। छोटा गाँव हो या बड़ा, छोटा आदमी हो, या बड़ा सभी के यहाँ पदार्पण करते थे। महाराजकी आज्ञा से प्रत्येक गाँव में मंदिरो का निर्माण हुआ था। नंद-संत तथा आदि आचार्य महाराजश्री के विचरण से उस समय उत्तर देश के झाडी प्रदेश में ९२ गाँवो में सत्संग का बीजा रोपड़ हो गया था। बाद में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री केशवप्रसादजी महाराजश्री चार वार पदार्पण किये थे। प.पू.ध.धु. आचार्यश्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री दो बार पधारे थे। प.पू.ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पांचवार पधारे थे। प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री वर्ष में १० बार तथा वर्तमान आचार्य कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री वर्ष में २० वार पधारते हैं। झाडी देश को नवपल्लवित रखते है।

संवत १९१२ में महानुभावानंद स्वामी लूणावाडा पधारे उस समय स्वामी मंदिर में सीढी बन रही थी। उस स्थान का मालिक जादवजी मवाडी ग्वालियर राज्य के दिवान थे। वे घोडागाडी रखते थे। उस समय स्वामी से कहा कि आप मंदिर की सीढी भीतर की तरफ लेली जिये मेरी घोड़ा गाडी चली जाय। दिवानजी ग्वालियर पहुंचे उसी समय राजाने उन्हें नौकरी में से निकाल दिया। घोडागाडी भी वापस ले लिया। ऐसे दूसरे (द्वितीय) बदरिकाश्रम के सत्संग के सुवर्ण इतिहास का अनेकों इतिहास है। स.गु. निर्गुणदासजी स्वामीने लगातार पांच वर्ष तक झाडी देश में विचरण किया। इस लिये उनकी लिखी हुई बातो में झाडी देश का चमत्कार विशेषरुप से लिखा गया है। बालासिनोर लूणावाडा, खारोल, कटाणा, कोठंबा, गोठीब, संतरामपुर विस्तार के ९२ गाँवो में नंद संत के समय से सत्संग तथा मंदिरो का निर्माण हुआ था आज भी श्री नरनारायणदेव के अडिग निष्ठावाले हरिभक्तों की संख्या अनेक है।

(वांचने योग्य - गोपालानंद स्वामी के शिष्य सद्गुरु निर्गुणदासजी स्वामी की वातो)

प्रसादी के पत्रों का आचमन

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

मूलपत्र : भगवानश्री स्वामिनारायणने सं. १८८६ भाद्र शुक्लपक्ष-१ को लिखवाये हुए पत्र इस मासिक में प्रसिद्ध किये जा रहे हैं।

संवत १८८५ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष-९ को भगवान श्री स्वामिनारायण के स्वहस्त बनवाये हुए मंदिरो के महंत पद पर अग्रगण्य सद्गुरु संतो की नियुक्ति, धर्मवंशी आचार्यश्री की इच्छानुसार करके उस संदर्भ में पत्र लिखवाया था। उस असल पत्र को कोर्ट में भी प्रस्तुत किया गया है। स्वामिनारयण म्युजियम में इस पत्र को होल मे दर्शनार्थ हेतु रखा गया है।

इस पत्र के अनुसंधान मं थोडे समय बाद भगवान स्वामिनारायण ने एक दूसरा पत्र सं. १८८६ को भाद्र शुक्लपक्ष-१ को लिखा था। उस में सर्वज्ञानंद स्वामीने कहा था कि, हमने आपको अमदाबाद मंदिर का महंत बनाया है अर्थात् अहमदावाद श्री नरनारायणदेव के मंदिर में हुए सभी महंत, श्री हरिकी इच्छानुसार धर्मवंशी आचार्यश्री द्वारा नियुक्त किये गये हैं। वे सभी महंत श्रीहरि के प्रतिनिधिहै। सभी महंतो को यदि कोई उचित आवश्यक कार्य हेतु सत्यपाठ-सूचन की आवश्यकता हो तो बुजुर्ग धर्मयुक्त सद्गुरु संत का आग्रह करना। तथा धर्मवंशी आचार्यश्री की आज्ञा में रहकर मंदिर का कार्यभार देखना। विभाजन के समय अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के बड़े सद्गुरु, समर्थ संत महानुभावानंद स्वामी को श्रीहरि के बड़े संत के रुप में प्रस्थापित करे उनकी आज्ञा में रहने को कहा। इस प्रकार श्रीहरि कहते हैं अहमदाबाद, भूज आदि मंदिरो के महंत को भी महानुभावानंद स्वामी की आज्ञा में रहना है।

नरनारायणदेव गादी के समग्र त्यागी साधु-ब्रह्मचारी को महानुभावानंद स्वामी की आज्ञा में रहने को कहा तथा साथ में धर्मवंशी आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री की इच्छानुसार ही रहना। साक्षात् अक्षरधाम के अधिपति श्रीहरि भी इस लोक में धर्मवंशी आचार्यश्री की कितनी बातो को अमान्य रखते थे इस बात की झलक यहाँ दिखाई देती है। धर्मवंशी की ईच्छा मौखिक नहीं है अपितु इस पत्र के ऊपर उसकी मुहर-छाप है वह भी अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को श्रीजी का उपदेश ही हमारा आचरण होना चाहिए। आज के युग में धर्मकार्य हो या व्यवहार का कार्य धर्मवशी आचार्यश्री की आज्ञा-अनुसार ही वर्तन करना चाहिए। श्रीजीने भी स्वयं महंतो की नियुक्ती की परंतु मेनेजमेन्ट के सिद्धांतो के अनुसार उनको अबाधित सत्ता नही प्रदान की है। मंदिर में व्यवस्थापन खर्च हेतु मंदिर के अनुभवी बुजुर्ग संत से परामर्श प्राप्त करना तथा साथ ही सभी त्यागिओं को धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में रहने की आज्ञा की क्योंकि जिस श्रीहरिने स्वमुख से ही कहा है कि, आज धर्मवंशी आचार्य है वे हमारे स्थान पर हैं उनका सेवन-पूजन हमारे सेवा-पूजा के समान है।

सुन्दर व्यवस्थापन हेतु श्रीजी स्वरुप धर्मवंशी आचार्यश्री प्रत्येक मंदिरो में महंतो की नियुक्ति करे, प्रत्येक संत-हरिभक्तगण उनकी आज्ञ का पालन करे, धर्मवंशी आचार्य-संतो को आदर भाव दे, व्यवस्था की दृष्टि से सुंदर लोकशाही तरीके से सबके साथ-सहकार के साथ एक व्यक्ति के मार्गदर्शन से कैसे कल्याण मार्ग पर चला जाय उसके बाद श्रीहरिने हमको शिखाये हैं। कल्याण हेतु आर्थिक व्यवस्था को गौण करके धार्मिकत्व को महत्व देने वाली सुनहरी सलाह इस संप्रदाय के नीव में हैं।

श्रीहरि के अनुसार, अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के साधु ब्रह्मचारी को अयोध्याप्रसादजी की आज्ञा में रखा है। चाहे वे शिक्षाप्राप्त करने वाले संत

पेईज नं. १०

अहिंसा - मनुष्य मात्र का सबसे बड़ा धर्म

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर पूरे विश्वमें स्वामिनारायण संप्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर है । इस मंदिर में श्री स्वामिनारायण भगवान ने स्वयं अपनी बाहों भरकर अपने ही स्वरुप श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया है । अर्थात् स्वामिनारायण भगवान इस मंदिर में श्री नरनारायणदेव के स्वरुप में दर्शन दे रहे हैं । स्वामिनारायण भगवान किसी भी मनुष्य की हिंसा करने की हिंसा करने की अनुमति नहीं दिये है । सर्व शास्त्र के साररुप श्रीहरिने शिक्षापत्री लिखी है । जिस में मनुष्यमात्र के सामान्य धर्म में मनुष्य अहिंसा की प्रथम चर्चा करते हुए कहा है कि हमारे आश्रित किसी भी प्राणी की हिंसा न करे । इतना ही नहीं बल्कि जान बूझकर, जू, खटमल इत्यादि जीवो की हिंसा नहीं करना चाहिये । इससे भी अधिक बल दिया है स्त्री तथा धन की प्राप्ति के लिये या साम्राज्य की प्राप्ति के लिये किसी भी स्थिति में किसी की भी हिंसा नहीं करनी चाहिये । जो शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन करे वही स्वामिनारायण के सच्चे आश्रित कहे जायेंगे । कोई भी धर्म का लोप करके ऐसा कहे कि मैं स्वामिनारायण धर्म का पालन करता हूं, मैं वैष्णव हूं यह वात धर्म विरुद्ध है । मंदिर में जाने मात्र से स्वामिनारायण धर्मवाले हो जायेंगे ऐसा नहीं है । स्वामिनारायण भगवान के अनुकुल रहे तो ही संप्रदाय के आश्रित कहेजा सकते हैं । श्रीहरि ने शिक्षापत्री में सर्व प्रथम मानवता का पाठ सिखाया है । बाद के श्लोकों में मंदिर, पूजा की वात की है । श्रीहरि के अपर स्वरुप श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अपने आशीर्वचन में कईबार कहते हैं कि **Behuman First** पहले हम मनुष्य बने । एक आदमी दूसरे आदमी का खून करे दे तो वह आदमी की व्याख्या में आही नहीं सकता इतना ही नही परंतु शिक्षापत्री भाष्य में तो ऐसा लिखा है कि इस तरह की हिंसा करने वाले को नरक का दु:ख भोगने के बाद भी मनुष्य शरीर नहीं मिलता । मनुष्य की हिंसा करने वाले को अत्यन्त दु:ख होता है । आत्महत्या करने का भी शास्त्रो में निषेधकिया गया है । तो अन्य की हिंसा करने का हमे अधिकार कहाँ है । इसलिये ऐसे अधर्म राक्षसी वृत्ति का प्रदर्शन करके कभी भी कोई इसपवित्र धर्म या मंदिर के बीच में नहीं लाये । इससे धर्म दूषित होता है ।

मन, कर्म, वचन से भी किसी प्राणीमात्र का द्रोह नहीं करना । इसे भी अहींसा कहा गया है । सभी प्राणियों को अपनी आत्मा जैसा ही समझना चाहिये । अपने शरीर को कोई पीडा पहुंचावे तो स्वयं को जैसा अनुभव होता है वैसी ही पीडा अन्य के विषय मे समझनी चाहिए । उन प्राणियों की जो श्वास निकलती है वही पाप रुप होकर सजा के लिये या परिणाम भोगने के लिये सामने आती है । इस लिये श्रीमद् भागवत में शुकदेवजी महाराज ने जो कहा कि छोटे जीवों को मारने से भी अंधकूप नरक में गिरना पड़ता है । जिस प्राणी की हिंसा करते है वही पशु, पक्षी, सर्प, बिच्छू इत्यादि नरक में पीड़ा देते हैं । हिंसा से सभी अनर्थ की परंपरा वाले ऐसे संसार की प्राप्ति होती है । अहिंसा सभी धर्म शास्त्रों में प्रतिष्ठित है । महा भारत में भीष्म ने भी कहा है कि धर्मात्मा मनुष्य को अहिंसा का ही आचरण करना चाहिये । सभी धर्मालम्बी अहिंसा को श्रेष्ठ मानते हैं ।

मोक्ष धर्म में कहा गया है कि प्राणी के अहिंसा से बड़ा कोई धर्म नहीं है । किसी भी बड़े अपराधमें मनुष्य की हिंसा नहीं करनी चाहिये । क्योंकि मनुष्य देह अति दुर्लभ है । चारो पुरुषार्थ (कर्म, अर्थ काम, मोक्ष) इसी शरीर से सुलभ हैं । इसलिये शरीर का नाश नहीं करना चाहिये ।

याज्ञयल्यक्य कहते हैं कि अज्ञान में कोई पाप हो जाय तो उसका प्रायश्चित है लेकिन ज्ञानपूर्वक किया गया पाप नरक में दु:ख देने वाला होता है । कारण यह कि प्रायश्चित करने से पुण्य भी मिलता है और साथ में पाप का दु:ख भी भोगना पड़ता है। इसलिये मनुष्य बधजैसा कोई निन्दनीय कर्म नहीं है । भगवान के पास मंदिर में जाकर इस पाप कर्म की माफी मांगना अर्थात् अपनी आत्मा को दगा देने जैसा है। भगवानने हम सभी के लिये कुछ छोडा नहीं है। स्वयं लिखी हुई शिक्षापत्री में जो भी आज्ञा किये हैं उसे वांचकर चिन्तन करके किसी कार्य का निर्णय करना चाहिये। भगवान मात्र मंदिर में मूर्ति के रुप में ही नहीं रहते, शिक्षापत्री भी भगवान की स्वरुप है। धर्मवंशी आचार्यश्री भी श्रीहरि के स्वरुप है। उनकी पत्नी प.पू. गादीवालाजी श्री लक्ष्मीजी की स्वरुप है। उनका आशीर्वचन पढने तथा सुनने लायक होता है । श्रीहरि हजारो संत तथा सांख्ययोगी की सेना प्रदान किये हैं। दुनिया में कोई ऐसा संप्रदाय नहीं है जहाँ पर इस तरह की व्यवस्था हो। यह सब जानकर जो मनुष्य की हत्या जैसा अपराधकरता है तो उसमें भूल किस की है ?

शिक्षापत्री में महाराजने विधितथा निषेधक्या करना और क्या नहीं करना यह स्पष्ट समझाया है। जो महाराज की आज्ञा में रहते हैं उन्हीं का धर्म तथा भक्ति बढती है। सुख-शांति, वैराग्य सबकुछ उनके वचन में है।

भगवान का धामभी उन्हीं के वचन में है। साधन मात्र वचन में आता है। वचन के विरुद्ध कोई चलता है तो उसे दु:ख मिलता है, वचन का त्याग किया तो सभी साधन छोड़ना पड़ता है। वचन ही सच्चा आभूषण है। वैराग्य मूर्ति श्री निष्कुलानंद स्वामी वचन विधी में लिखते हैं कि -

''उपाय एवो करवो नही, जेणे करी खिजे जगदीश ।
राजी कर्यानुं रह्यु परु, पण हरिने न करावो रीश ॥

अनु. पेईज नं. ८ से आगे

हो या ''खेलने वाले साधु'' अर्थात् सेवा में जुडे हुए सभी संतो का धर्मवंशी की आज्ञा में रहना चाहिए श्रीहरि को अपने साधु ब्रह्मचारी त्यागी वर्ग में अटूट विश्वास है, कि मेरे त्यागी मेरी आज्ञानुसार जरुर व्यवहार करेंगे। तथा चेतावनी देते हुए कहा कि, जो अयोध्याप्रसादजी महारजश्री की आज्ञामें नहीं रहेगा उसके दूसरे स्थान पर जाने पर बचन विद्रोह कहा जायेगा और वह सत्संग से बाहर होगा। संत-त्यागी वर्ग की यह स्थिति हो तो, गृहस्थ हरिभक्तों को तो अधिक सावधान रहना चाहिए। श्रीहरि को छोडकर दूसरे स्थान पर तो नही जा रहे वो ? नहि तो, श्रीहरि हमको निश्चित रुप से सत्संग से बाहर ही जानेंगे। उस में कोई शंका नहीं है । स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कल्याण निर्णय में कहते हैं,

जे जे श्रीहरि ने वचन रे, तेमां रहे जियां लगी जन रे,
तियां लगी तारे जीव बहु रे, पामे हरिना धामने सहु रे,
ज्यारे निसरे वचन थी बारे हे, त्यारे पोते न तरे, तारे रे

(निर्णय-१७)

इस पत्र से स्पष्ट होता है कि हम चाहे कितने भी बड़े पदाधिकार को प्राप्त हो तो भी धर्मवंशी की आज्ञा में रहना चाहिए । पदाधिकार होने पर भी मंदिर में खर्च करते समय संतो की सलाह लेना चाहिए । आचार्य की इच्छानुसार वहीवट करना चाहिए। पढाई का कार्य हो या सेवाकार्य सभी में धर्मवंशी की आज्ञा का पालन होना चाहिए। सेवा कार्य से मान-मोह-अडंकार में मग्न नहीं होना चाहिए। आज्ञा से बाहर होने पर अपनेआप ही सत्संग से बाहर हो जायेंगे।

भगवान श्रीहरिने स्वयं लिखवाये पत्रों में जिसमें संतो-हरिक्तो को आज्ञा करके सुनहरे सूचनो के साथ किस प्रकार वर्तन करना है। ऐसे हस्तलिखित मूल पत्र प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपनी अंगत प्रसादी की लायब्रेरी में से सत्संग समाज के लिए स्वामिनारायण म्युजियम में रखे हैं। उनका ध्यानपूर्वक दर्शन करके स्मरण करके उसके अनुसार वर्तन करना चाहिए तो ही श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त होगी।

सेवा

- अनुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अमदावाद)

भगवान के पास निरंतरवास करना हो तो ''सेवा'' यह सर्वोत्तम साधन है । धर्म या सम्प्रदाय के लिये की जाने वाली सेवा में पोलसी नहीं होती । हाँ इस में सकाम अथवा निष्काम इसतरह का दो प्रकार अवश्य होता है।

श्रीहरिने निष्काम सेवा को सर्व श्रेष्ठ बताया है । महाराज के दर्शन का तथा कथा का त्याग करके भी रतनजी तथा मियाजी लक्ष्मीवाडी में सफाई करते थे । और बाद में दरबार गढ की सभा में आते थे । श्रीजी महाराजने समग्र सभा में उन्हें उत्तम सेवक कहकर प्रशंसा किये थे। इस तरह मूलजी ब्रह्मचारी की अखंड सेवा को उत्तम कहकर उनकी सेवा को (गुण को) ईश्वर की तरह बताये । ये सभी हरिभक्त मात्र निष्काम सेवा करते थे । हमे तो मात्र महाराज को प्रसन्न करना है । उनका उद्देश्य मात्र महाराज को प्रसन्न करने का ही था ।

सकाम सेवा अर्थात् सेवा के बदले में कुछ प्राप्त करने की ईच्छा न रखना । बाद में संकल्प हो यदि संकल्प पूरा न हो तो परमात्मा तथा सत्संग में से विमुख होने का विचार आयेगा ।

कोई भी धर्म हो या संप्रदाय हो वह सेवा के अखंड प्रवाह से चलता रहता है । पैसा यद्यपि बहुत उपयोगी चीज है । उसी से सबकुछ सिद्ध होने वाला है । धनाढ्य गृहस्थ भक्त मंदिर के लिये अथवा देव के लिये उन्मुक्त भाव से धन की सेवा न करे तो सत्संग का कोई भी कार्य पूर्ण होना संभव नहीं है । इसीलिये तो यजमान तथा सहयजमान, मुख्य यजमान सर्व प्रथम प्रशंसित होता है । यह एक व्यवहार है और धन से जो लोग पुष्ट हो उन्हें भी आगे किया जाना चाहिये । हरि की ऐसी आज्ञा भी है।

सेवा जितनी नीचे की उतना ही फल अधिक । उका खाचर भी श्रीहरि का दर्शन तथा ज्ञानवार्ता करते । एकबार कुत्ते ने विष्ठा कर दिया तो दर्शन और ज्ञान की वात सभी छोड़कर पहले कुत्ते की विष्ठा उठाये बाद में स्नान करके महाराज का दर्शन किये । इसकी प्रशंसा महाराजने सभा में की ।

भगवान की अपेक्षा भक्तो की सेवा भगवान को अधिक प्रिय थी । सेवा की अपेक्षा भक्त की भावना या उद्देश्य श्रीहरि के लिये महत्व का था । गंगाबाई गरीब थी उसी के सामने जमना बाई ब्राह्मणी तथा धनाढ्य भी थी । फिर भी गंगाबाई का भाव अधिक था । जिससे महाराज गंगाबाई के घर जागर बाई के द्वारा भावपूर्व खिलाये गये भोजन को श्रध्दापूर्वक किये । जमना बाई का रसाल थाळ को वापस कर दिये । जेललपुर में भी अनेक पक्कवान कोबगल में रखकर जीवण भगत के मठ की रोटी खाये ।

परमात्मा को पहले से ही विदुर की भांजी (साग) खाने की आदत रही है, दुर्योधन के यहाँ ५६ प्रकार के पक्वान्न नही स्वीकार किये । सुदामा की मुठ्ठी भर का तंदुल उन्हें अधिक मीठा लगा था । शबरी की जूठी वेर भी स्वादिष्ट लगा था । इन सभी प्रसंगों में भक्तों की भावना की प्रधानता झलकती है । भगवान के मन में यह नहीं होता कि मेरा भक्त गरीब है या धनवान है, भगवान तो भावना के भूखे हैं ।

जीवन भर जीवन निर्वाह के लिये मेहनत मजूरी करके जो द्रव्योपार्जन करें वही धन हमे गतिशील बनाये इसके लिये स्वामिनारायण भगवान ने आज्ञा की है यदि उस आज्ञा के अनुसार जीवन व्यवहार चलाजाय तो निश्चित ही महाराज चिन्तारहित करके आपकी चिन्ता को वे अपने में लेलेंगे ।

जो गृहस्थ व्यक्ति अपने उद्यम - (पुरुषार्थ) से धन प्राप्त करे उसमें से १० या वीसवां भाग श्रीकृष्णार्पण करे तो जीवन में सुख ही सुख रहेगा ।

दशांश या वीशांश कृष्णार्पण करने की वात मंदिर के खर्च के लिये नहीं कहा गया है बल्कि आपके द्रव्य की

पेईज नं. १५

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

॥ श्री ॥

पांडे श्री अयोध्याप्रसाद हरिकृष्णजी

लिखावित स्वामी श्री ७ सहजानंदजी महाराज जत श्री अमदावाद मध्ये साधु सर्वज्ञानंद स्वामी नारायण वांचजो । बीजुं लखवा कारण ए छे जे तमने अमे अमदावादना महंत कर्या छे ते तमारे कांई काम काज पूछवुं होय तो महानुभावानंद स्वामी ने पूछजो अने तमारी अमदावादनी जायगाना जे साधु छे ते सर्वे महानुभावानंद स्वामीनी आज्ञामां रहेशे । बीजुं भुजनगरनी जायगाना महंत वैष्णवानंद स्वामीने कर्या छे ते पण महानुभावानंद स्वामीनी आज्ञामां रहेशे तथा ब्रह्मानंद स्वामी आदिक जे भणवावाला साधु तथा रमता साधु ते सर्वे महानुभावानंद स्वामीनी आज्ञामां रहेशे । बीजुं आजदिन थी श्री नरनारायणना तथा लक्ष्मीनारायणना साधु तथा ब्रह्मचारी सर्वेनो विभाग करीने जेटला नरनारायणना साधु तथा ब्रह्मचारी छे ते सर्वेने अयोध्याप्रसादनी मरजी लईने अने महानुभावानंद स्वामीनी आज्ञामां राख्या छे माटे ते प्रमाणे सर्वे नरनारायणना साधुने तथा ब्रह्मचारीने वरतवुं अने अयोध्याप्रसादजी जायगाना महंत अमे कर्या छे तेने जे कांई काममां दोकडो रूपयो वापरवो होय ते महानुभावानंद स्वामीनी आज्ञा करीने वावरवो पण आज्ञानुं उल्लंघन करीने कोई बीजा साधुने कहेवे करीने करवुं नही । बीजुं साधु ब्रह्मचारीनी वेंचण करीने नरनारायणना साधु ब्रह्मचारीने अयोध्याप्रसादजीनी आज्ञामां राख्या छे । जे साधु ब्रह्मचारी अयोध्याप्रसादजीनी आज्ञामां जे नहि रहेने बीजे ठेकाणे जासे ते साधु वचन द्रोही गुरुद्रोही छे ने सत्संग बाहरे छे ॥ संवत् १८८६ ना भादरवा सुदी-१

भगवान स्वामिनारायणने अपने हाथों से यह पत्र लिखा था, जो समग्र श्री नरनारायणदेव देश के साधु-ब्रह्मचारी तथा हरिभक्त को उद्देश्य करके लिखा गया है। आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी की संमती से सभी को महानुभावानंद स्वामी की आज्ञा में रहने की वात की गयी है। यह स्पष्टता की कि जो धर्मवंशी आचार्य की आज्ञा में नहीं रहेंगे तथा अन्यत्र जायेंगे, या दूसरे को मानेगें तो वे वचनद्रोही तथा गुरुद्रोही कहे जायेंगे और सत्संग से विमुख कहे जांयेगे। हम सभी श्रीजी की इस आज्ञा का पालन करने के लिये सदा मन-वचन-कर्म से धर्मवंशी आचार्यश्री की आज्ञा में रहें तथा श्री नरनारायणदेव का दृढ आश्रय रखें। अन्यथा श्रीजी महाराज सत्संग से बाहर मानेंगे, इससे अपना कल्याण नहीं होगा।

यह पत्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. ९ में हरिभक्तों के दर्शनार्थ रखा गया है। सभी हरिभक्त भाव पूर्वक दर्शन करेंगे तथा आज्ञापालन की चाहना रखेंगे तो निश्चित ही कल्याण होगा।

(प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल)

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।
मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789
नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियममे गणेश चतुर्थी के उत्सव

श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री पंचदेवों के पूजन की आज्ञा की है और श्री स्वामिनारायण म्युजियम में स्वयं श्रीहरिने जिस गणपतिजी की मूर्ति की पूजा की थी वही मूर्ति होल नं. १ में प्रस्थापित है, इस लिये प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्री गणफतिजी का पूजन गणेश चतुर्थी भाद्रपद शुक्ल चौथ ता. १९-८-१४ को प्रातः ८-०० बजे से ११ बजे तक आयोजित किया गया है। गणपति पूजन में सभी हरिभक्त को लाभ मिले इस हेतु से पति-पत्नी दोनो के बैठने की व्यवस्था की गयी है। जिन हरिभक्तों को इसका महालाभ लेने की चाहना हो वे ११००/- (एक हजार एक सौ) रुपये श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भरकर रसीद प्राप्त करलें। इसकी विशेष जानकारी अधोनिर्दिष्ट फोन से की जा सकती है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि मई-२०१४

५१,०००/-	डाह्याभाई खुशालभाई पटेल - नेत्रामली ता. इडर।	१०,०००/-	मीनाबहन के. जोषी घनश्याम इन्ड. बोपल
२५,०००/-	सोनी जिग्नेसभाई नटवरलाल - अमदावाद	५,५०५/-	करशन लालजी हालाई ० कोटकी (कच्छ) ध.प. तेजबाई
२५,०००/-	अमृतभाई एस. पंचाल टोडा ता. भिलोडा कृते हितेशभाई पंचाल	५,१००/-	पटेल शैलेशभाई कल्याणदास - कडी
११,०००/-	हरजीवनभाई करशनभाई पटेल - सायंससीटी कृते डॉ. दिनेशभाई पटेल	५,००१/-	गिरीशभाई हरिभाई कुकडिया - मोरबी
१०,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर - भुज (कच्छ)	५,०००/-	भरतसंग बालुभाई - समला -कृते अमदावाद
		५,०००/-	डॉ. कांतिभाई पटेल - मुंबई

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (मई-२०१४)

ता. ८-६-१४	पटेल विनोदभाई बलदेवभाई - महादेवनगर।
ता. १५-६-१४	(प्रातः) कांतिलाल नारणदास पटेल - डांगरवा। कृते मुकेशभाई तथा भरतभाई पटेल (सायंकाल) पटेल अरविंदभाई पूनमभाई (असलालीवाला) घोडासर
ता. १७-६-१४	अमृतभाई पंचाल परिवार - गांधीनगर कृते हितेशभाई पंचाल।
ता. २२-६-१४	(प्रातः) जिग्नेसभाई नटवरभाई सोनी नवरंगपुरा। (सायंकाल) कांतिभाई गोविंदभाई परमार - कालुपुर कृते प्रशांतभाई तथा भरतभाई
ता. २९-६-१४	(प्रातः) नानदास शामजी वरसाणी - माधापर (वर्तमान यु.के.) (सायंकाल) प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री कृते संदीपभाई तथा जयकृष्णभाई तथा डॉ. कल्पेशभाई एवं अमृतभाई तथा जनकभाई पटेल

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

संपतिका सदुपयोग करना

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

बाल मित्रो ! वेकेशन में खूब खेले, खूब घूमें । कोई मामा के घर, कोई मौसी के घर तो कोई यात्रा-प्रवास में घूमकर आनंद लिये । वापस आकर अभ्यास करने में लग गये होंगे । अब मन लगाकर अभ्यास करना प्रारंभ करदीजियेगा क्योंकि -

विद्याददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनाद्धर्म ततः सुखम् ॥

विद्याभ्याससे जीवन में विनय, विवेक, पात्रता, धर्म, धन इत्यादि सद्गुण प्राप्त होते है ।

जीवन में विनय, विवेक, सत्संग जैसे गुण न हों तो खाली अढडक संपत्ति हो तो भी मनुष्य के जीवन में सुख नहीं मिलता ? इसी सन्दर्भ में एक दृष्टांत यहाँ लिखते हैं -

एक बडा नगर था । नगर में सबसे बडी हवेली, उसमें नगर शेठ रहते थे । अढडक संपत्ति रहते हुए भी शेठ के मन में शांति नही थी । कारण यह कि शेठ कंजूस था । लेकिन शेठानी उदारभाव की थी । शेठ की कंजूसाई का कारण उसके बाल्यावस्था की गरीबी थी । खूब श्रम करके बड़ी उम्र में खून-पसीना एक करके पैसा एकत्रीत किये थे । लेकिन गरिबाई की मानसिकता ''चमडी टूटे लेकिन दमड़ी नही छूटे'' इस तरह की होगयी थी ।

शेठानी जब भी दान-धर्म की बात करती शेठ तुरंत खून पसीने की कमाई को, संपत्ति को जहाँ तहाँ फेंक देने के लिये मना करता ।

शेठकी वात सुनकर शेठानी मौन हो जाती थी । दूसरा और कोई ऐसा नहीं था जो शेठ को कहसके ।

शेठ को लक्ष्मी की लोलुपता इतनी बढ गयी कि रात-दिन संपत्ति का सेवक बनकर संपत्ति के पीछे-पीछे भागने लगा । प्रति रात्रि को सोना-मोहर की गिन्ती करता और उसे उचित स्थान पर रख देता । ऐसा प्रतिदिन का कार्यक्रम हो गया ।

एक रात्रि में शेठजी सोनामोहर गिनकर यथा स्थान रखकर सो गये । उस रात्रि में चोर उनकी हवेली में से सभी सोनामोहर उठा ले गये । वह चोर इतना चतुर था कि जहाँ से सोना मोहर उठाया था वही पर पत्थर रख दिया, जिससे उस रात्रि में चोरी हुई है, ऐसा सेठ को ख्याल नहीं आवे । दूसरी रात्रि में शेठजी तिजोरी में से सोना मोहर निकालने का प्रयत्न करते है लेकिन सोना मोहर की जगह पर पत्थर हाथ लगता है । अब वे जोरजोर से चिल्लाते हुए मूर्च्छित होकर गिर पडे । शेठानी दोड़कर आयी । शेठ के ऊपर पानी का छिडकाव किया गया । कुछ समय के बाद शेठ को चेतना शक्ति आयी । शेठानी को देखक रोते हुए कहने लगे कि कोई चोर सोनामोहर चुरा ले गया और उसकी जगह पर पत्थर् रख दिया है ।

शेठानी दान-धर्म को मानती थी । उसके मन में विचार आया कि अभी लोहा गरम है इसलिये उसने शेठ से कहा कि सोना मोहर की जगहर पत्थर रख दिया इससे आपको कोई फर्क नहीं पडेगा । शेठ बड़े आश्चर्य के साथ शेठानी को देखते हुए कहे कि क्यों ? तब शेठानीने शेठ से कहा कि - जिस तरह आप सोना मोहर गिनाकरते थे उसी तरह अब पत्थर गिनेंगे, गिनने में कोई फर्क तो हैं नहीं । पत्थर गिने चाहे सोना मोहर गिने ।

शेठानी की यह वात हृदय में स्पर्श कर गयी । उनके समझ में आगया कि हमारा सभी काम परोपकार के लिये होना चाहिए । अपने पास जो भी संपत्ति हो उसका उपयोग यदि परोपकार में नहो तो वह सम्पत्ति पत्थर् के समान है । अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिये अगल-बगल के पशु पक्षी, पृथ्वी, पानी, प्रकाश, हवा, वनस्पति सहायक होते हैं । यदि इन सभी तत्वों की सहायता नहीं मिले तो अपनीजीवन की यात्रा खत्म हो जायेगी । इसके अलागा भगवान, माता-पिता, स्वजन, साधुपुरुष, मित्र, समाज इत्यादि जीवन को आगे बढाने

में सहायक होते हैं। इसका निरंतर ध्यान रखना चाहिये।

जिसके पास संपत्ति हो वह अपनी संपत्ति का उपयोग कहाँ करे इसके लिये - भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री में लिखा है - कि - भगवान संबन्धी यज्ञ करना चाहिये, संत-भूदेवों को भोजन कराना चाहिये, भगवान को प्रसन्न करने के लिये मंदिरों में बड़े बड़े उत्सव कराना चाहिये। विद्यादान, अन्नदान इत्यादि का दान अपने सामर्थ्य के अनुसार करते रहना चाहिए। अपनी आवक में से १०% अथवा २०% दान अपने इष्टदेव को विना भूले समय-समय पर करते रहना चाहिए। इस तरह संपत्ति के उपयोग से लक्ष्मीजीका आशीर्वाद मिलेगा। ऐसी पात्रता के लिये आप सभी खूब विद्या का अभ्यास करें, नम्र बने और सच्चे सत्संगी बने।

●

दयालु की दया का पार नहीं

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

वे भक्त कितने भाग्यशाली होंगे जिन्हे परमात्मा का साक्षात् सानिध्य भगवान के साथ - बैठे-उठे-घूमे, फिरे, वात किये, अनेक लीला चरित्र तथा ऐश्वर्य की अनुभूति किये। ऐसे भक्त देवकृष्णभाई की कथा यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

एकवार श्रीजी महाराज के साथ बढवाण के देवकृष्ण नाम के ब्राह्मण भुज जा रहे थे। दूसरे सन्त-हरिभक्त भी साथ थे। देवकृष्ण को रण में चलते-चलते प्यास लगगयी। आंख में अंधेरा छा गया। देवकृष्ण ने भगवान से कहा कि - महारा ज! अब कुछ दिखाई नहीं दे रहा है, गला सूख रहा है। श्रीजी महाराजने कहा कि रण में पानी भरा है उसे पी लीजिये। उन्होंने पानी जीभ से लगाया तो खारा और जहर की तरह लगा। महाराज ! यह पानी तो खारा तथा जहर की तरह है। यह कैसे पी सकेंगे। महाराजने कहा कि देखिये सभी नदियां इस समुद्र में मिल रही हैं। वहाँ जाकर पानी पीलीजिए। महाराज की आज्ञानुसार २५ पग आगे जाकर पानी को चखे तो वह गंगाजल की तरह मधुर था। उन्होंने कहा कि महाराज यहाँ का पानी मीठा-अमृत है। सभी को महाराजने कहा पानी पीने की आज्ञा दी संत-भक्त पानी पीकर तृप्त हो गये। महाराजने भी वह जल पीया - बाद में सभी आगे चल दिये।

संघ के सभी लोग आगे चले गये और वे देवकृष्ण ब्राह्मण वहाँ रुककर मुख का कुल्ला किये तो पुनः खारा-जहर की तरह वह पानी लगने लगा। श्रीजी महाराजने कहा कि गंगा-यमुना की लहर सदा एक जगह नहीं रहती कभी इधर आती है तो कभी उधर जाती है, लुप्त भी हो जाती है। तब समुद्र का पानी खारा हो जाता है। इस तरह प्रभु ने अपनी ऐश्वर्य का प्रभाव बताकर सभी को खारे पानी से मीठा पानी करके पीलाया। दयालु की दया का कोई पार नहीं है।

मित्रो ! भगवान को इसीलिये भक्तवत्सल कहा जाता है, दयालु कहा जाता है। परंतु भगवान की कृपा की वात्सल्यता प्राप्त करने के लिये पात्र बनना आवश्यक है। यह पात्रता तभी आ सकती है जब भगवान की आज्ञा के अनुसार चलते हैं। उनकी आज्ञा है तो अपने शास्त्रों में से ज्ञानप्राप्त करके वैसा जीवन में उतारने पर भगवान की प्रसन्नता मिलती है।

अनु. पेईज नं. ११ से आगे

शुद्धि के लिये शास्त्रवचन है। या श्रीहरि की आज्ञा है।

श्री स्वामिनारायण भगवानने सेवा का दूसरा और भी उपाय बताया है वह है - ''संभावना''

संभावना का मतलब आदर पूर्वक की जाने वाली सेवा शिक्षापत्री श्लोक ६७, १३१, १४२ इन सभी में संभावना विशेष रुप से प्रदर्शित किया गया है।

''जो हमारे आश्रित है ऐसे गृहस्थ अपने माता पिता तथा गुरु एवं रोगातुर ऐसे जो कोई भी हों उनकी सेवा जीवनपर्यंत सामर्थ्य के अनुसार करें ॥१३९॥

सेवा भावना का यह सर्वोत्कृष्ट उदाहरण श्रीहरिने आज्ञा के रुप में उदाहरित किया है।

अंत में - परमात्मा के दर्शन हेतु जा रहे हों तब फूल नहीं तो फूल की पंखुडी का अर्पण करें। यह संस्कार ही सेवा भावना का सच्चा उद्गमस्थान है।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"अपना सत्संग एक खजाना है"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

सात - सात वर्ष से अपनी यह ससत्संग सभा चल रही है। फिर भी जितनी जागृति होनी चाहिये उतनी दिखाई नही देती। इसका क्या कारण है ? इसका एक ही कारण है कि सब कुछ आप लोगं को विना पुरुषार्थ के मिल गया है। महाराज इतना सुगम कर दिये है कि ''अपना सत्संग खजाना हो गया है।'' खजाना खोलते ही जैसे उसमें से हीरा, मोती, माणिक मिलता है लेकिन सत्संग रुपी खजाना में तो उससे भी अधिक अमूल्य रत्नभरा हुआ है। सत्संग के माध्यम से मोक्षरुपी खजाना प्राप्त होगा है। अपने संप्रदाय में ''शिक्षापत्री'' तथा वचनामृत ए दोनो शास्त्र बहुत अलौकिक है। सम्पूर्ण जगत में भगवान द्वारा प्रत्यक्ष उच्चरितवाणी किसी भी शास्त्र में मिलना असंभव है। वेद भी भगवान की वाणी है। लेकिन वेद को भगवानने पहले ब्रह्मा को दिये बाद में ब्रह्मा ने ऋषियों को दिया और ऋषियो द्वारा बाद में रचना हुई । श्रीमद् भगवदगीता भगवान कृष्ण की वाणी है। परंतु वह रणभूमि में कही गयी है। बाद में व्यासजी महाभारत में अवतरित किये हैं । वचनामृत ऐसा शास्त्र हें जो - श्रीजी महाराज के वचनरुपी अमृत को श्रवण करके लिखा है। इसलिये श्रीजी महाराजने हम सभी को इस पृथ्वी पर आकर इतना सब कुछ दिया है इसका हम सभी को ख्याल होना चाहिये। शरणागति स्वीकार करने के बाद ही सभी पापों का नाश होता है। हम वार-वार परमात्मा के पास वन्दन करते हैं मांफी मांगते है तब जाकर शरणागति मिलती है। अपने पाप का क्या कारण है ? अपने पाप का मूल कारण अपना देहाभिमान वारंवार परमात्मा के चरणों में मस्तक झुकाने से अपना देहाभिमान नष्ट होता है। अज्ञानता में कोई पाप हो जाय या कोई जीव की हिंसा हो जाय या अयोग्य आचरण हो जाय यह सब अपने देहाभिमान के कारण होता है। दूसरी बात यह भी कि जो वस्तु हमें परमात्मा से दूर ले जाती है, अपने लक्ष्य को भुला देती है उसे भी पाप कहते हैं। ऐसा क्या है जो परमात्मा से दूर ले जाता है, विषय में आसक्त करता है ? इन सभी का मूल कारण विषय का चिंतन है। इससे आत्म शक्ति क्षीण होती है। शरीर भी क्षीण होती है। जीवनमें जब समय मिलेगा तो परमात्मा की भक्ति करेंगे ऐसा कभी सोचना नहीं, अनुकूलता - प्रतिकूलता से दोनो जीवन में चलते रहेंगे। प्रहलाद जी के जीवन में अनुकूलता थी ही नहीं। फिर भी वे अपने लक्ष्य पर अडिग रहे ? भरतजी को तो सबकुछ अनूकल था, जंगल में रहते थे, भजन करते थे फिर भी मृग में आसक्ति हो गयी। इन सभी का सदा चिंतन करते रहेंगे तो किसी भी परिस्थिति में भगवान की भजन करते रहेंगे, कोई विघ्न नहीं आयेगा। घर की वस्तु हमें परेशान नहीं करती, बल्कि अपने भीतर की माया ही परेशान करती है। यदि सावधान रहेंगे तो घर में भी माया से दूर रहेंगे और भजन भक्ति भी होती रहेगी। किसी व्यक्ति में या वस्तु में आसक्ति नही रखना। इस जगत में चाहे जो भी अच्छा करेंगे लेकिन जगत के लोग प्रसन्न नहीं होने वाले है। राम भगवान होते हुये भी जगत को खुश नहीं कर सके तो हम लोग क्या कर सकेंगे ? इस लिये सृष्टि को नही, सृष्टि को बनाने वाले को खुश करें। एकबार नारदजीने कहा कि तीन वस्तु करे तो भगवान खुश रहेंगे । प्रथम यह कि प्राणी मात्र पर दया करना, अर्थात् जीव मात्र की हिंसा नही करनी। दूसरी वात यह कि मन, वचन, कर्म से किसी को दुःखी नहीं करना, महाराज जो दिया है उसी में संतोष मानना। तीसरा यह कि - इन्द्रियों के ऊपर संयम रखना। ये तीन वस्तु करें तो भगवान प्रसन्न हों। परंतु इन्द्रियो पर संयम रहता नहीं है। सलभ जिस तरह दीपक की लौ देखकर अकर्षित होता है - वह जानता है कि यह हमारे मृत्यु का कारण है फिर भी उसके ऊपर गिरकर आत्मसात् कर लेता है। इसी तरह अपनी इन्द्रिया दीपक के समान है और हम सलभ के समान है। हमें यह खबर है कि संसार का सुख क्षणिक है - विनाशी है। इस लिये अविनाशी सुख प्राप्त करने के लिये परमात्मा की शरणागति तथा

सत्संग रुपी खजाना की प्राप्ति करनी है। इसके लिये विवेक - संयम की जरुरत है । संसार में रहते हुए जागृत होकर तप करना होगा। तप का अर्थ है अपना मन एक क्षण के लिये भी परमात्मा से दूर न जाय। संसार से भागना तप नही है, बल्कि संसार में रहकर इन्द्रियो से उपरत होना तप है । महाराज में अपनी चित्त वृत्ति अखंड बनी रहे इस तरह सतत प्रयत्नशील रहना चाहिये, इसके लिये आप लोगों का सत्संग खूब बढे ऐसे श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

•

भक्तिरस का स्वाद

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

श्रीहरिने अत्यन्त कृपा करके मनुष्य शरीर दिया है । इसलिये परमात्मा का ऋण उतारना हमारा धर्म है। अत: भक्ति करके उनका ऋण उतारा जा सकता है। भगवान ने ज्ञान दिया है, बुद्धि दिया है, मंदिरो का साधन दिया है, शास्त्र तथा गुरु भी दिये है, अत: भगवान का दृढ आश्रय करके वैराग्यपूर्वक भजन-भक्ति करनी चाहिये।

निर्मल मन करने का सतत प्रयत्न करना चाहिये निर्मलमन में ही परमात्मा का वास होता है। जिस तरह वस्त्र गन्दा होजाने पर मात्र पानी में भिगाने से वह निर्मल हो जायेगा ऐसा नही है, उसे गरम पानी तथा साबुन में कुछ समय तक रखना पड़ता है तथा कपडे को पीटना पड़ता है तब वह साफ होता है। इसी तरह अपने मन रुपी वस्त्र में मैल लग गयी है इस लिये उसको साफ करने के लिये मन को भगवान की भजन भक्ति में लगाना चाहिये। यम, नियम, संयम, जप, तप रुपी साबुन का सहारा लेकर भगवान की भक्ति में डूबना पडेगा, भगवान की मूर्ति, कथा, कीर्तन में मन को लगाना होगा। बार-बार पूर्ववत् अभ्यासकरना होगा तभी वस्त्र की तरह मन निर्मल हो सकेगा। अन्यथा संभव नही है।

जैसे-जैसे मन कोमल होगा - वैसे -वैसे अपने अपराधकी माफी मागेगा । मन जबतक मक्खन की तरह मुलायम नहीं होगा तब तक भगवान के साथ तम मन का जुडना कठिन रहेगा। भगवान के सच्चे भक्त जब भगवान के कीर्तन गाते हैं तो आंखो से अश्रुधारा बहने लगती है। हम लोग घन्टो तक भजन करते हैं तो भी आंखो से एक बूंद आंसू नही गिरता । इसका कारण एक ही है कि हम जन्म जन्मान्तर से पाप करते आये हैं। मन के ऊपर पाप का कचरा पडा हुआ है जिससे मन निर्मल नहीं हो पा रहा है जब मन निर्मल हो जायेगा तभी हृदय को प्रभु की भजन में आनंद मिलेगा, अश्रु की धारा बहेगी । इसके लिये सदा संयमित जीवन होकर नित्य अभ्यास करते हुए भगवानमें ही अपने मन को लगाना चाहिए। सेवा का प्रभाव भी हमारे मन के ऊपर पडता है। संत सेवा, जनसेवा, गरीब की सेवा, रोगी की सेवा, करने से भी मन का पाप धुल जाता है। अपने मन के ऊपर मल की पर्त पड़ गयी है। उस मल को धोने का काम जन्म जन्मान्तर तक करना पड़ता है वह इसलिये कि जो खराब अभ्यास है वही तो मल है उस खराब अभ्यास रुपी मल को दूर करने के लिये भजन-भक्ति रुपी वस्तु का सतत अभ्यास करते रहने से जो पूर्वाभ्यास है वह धीरे धीरे नष्ट होगा और भक्ति का उदय होने लगेगा फिर हृदय में अद्‌भुत आनंद प्रतीति होने लगेगी।

नरसिंह महेता को जब सदेह भगवान गोलोक ले गये तब भगवान की रास लीला देखने का अनुपम आनंद मिला। उस रासलीला को देखने में इतने तल्लीन हो गये कि उनके हात की मशाल जलते ० जलते उनके हाथ को जलाने लगी और उन्हें भान न रहा। इसी तरह ब्रह्मानंद स्वामी जब वे कीर्तन गाते तब देहाभिमान भूल जाते थे। कीर्तन सुनने के लिये महाराज तथा मुक्तानंद स्वामी इत्यादि संत उनके पास आकर खड़े रहते फिर भी उन्हे ख्याल ही नहीं रहता। यही भक्ति की एकता है। उसी भक्ति रस में जो डूबजाता है उसे ही यह ज्ञान होता है दूसरे को नहीं।

अपने जीवन में भी भगवान की भक्ति का रस होना चाहिए। भक्ति से ही अपने जीवन में बाहर के कुसंग से बचा जा सकता है। यदि भक्ति में कमी रहेगी तो बाहर के दूषण आक्रमण करेंगे और मन चंचल बना रहेगा । इससे मन भक्ति-भजन में लग नही पायेगा । एकाग्र मन से भजन-भक्ति की जाय तभी भगवान की प्रसन्नता प्राप्त होती है। भक्ति के विना सारा पुरुषार्थ व्यर्थ है। भक्ति करने से सभी सद्‌गुण स्वत: अपने भीतर आ जाते हैं सद्‌गुण के बढने पर मन में शांति मिलती है। मन भी निर्मल हो जाता है। निर्मल मन में भगवान की प्राप्ति होती है। भगवान की प्राप्ति के बाद आनंद ही आनंद का अनुभव होने लगता है।

•

भक्तवत्सल भगवान

– पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल ता. कडी)

एक भक्त भाविक छे भलो, रहे कुंडले नाम छे कलो ।
करे कृषी कणबीनु कर्म, पाले सतसंगना जे धर्म ॥
भजे प्रभु प्रकट प्रमाण, स्वामी सहजानंद सुख खाण,
आवे संत स्वामिना जे घरे, करे सेवा तेनी सारी पेर ॥
(भक्त चिंतामणी – १३७/५-६)

उत्तर गुजरात में कडी के बगल में कुंडाल नाम का गाँव है । इस गांव में एक बार स्वामिनारायण के संत पधारे हुए थे, इस लिये कलाभाई पटेल सत्संगी हो गये । पूर्व में मुमुक्षु होने के कारण भगवान स्वामिनारायण में पक्की निष्ठा हो गयी । बाद में गाँव के लोगो से सतसंग की वात करते रहते थे । स्वयं धर्म नियम का पालन करते थे ।

इस तरह का वर्तन देखकर गाँव के लोग कला भक्त से कहे कि अरे कला ? इस नये धर्म को छोड़ दो, नहीं तो तुम्हारे साथ किसी प्रकार का संबन्धनहीं रहेगा । ''यह सुनकर कला भगतने कहा कि यह सत्संग तो मेरे जीवन में बड़ी गहरायी से उत्तर गया है, यह छोडना अब बड़ा कठिन है । इस तरह कला भगत का उत्तर सुनकर गाँव को लोग उन्हे परेशान करने लगे । उनकी जमीन को वे लोग ले लिये । इसके अलांवा उन्हे अपनी जाति में से बाहर कर दिये । फिर भी कला भगत अपने धर्म नियम कोनही छोडे । जमीन को लोगोने लेलिया हो कडी के मल्हावराव गायकवाड के पास जाकर फरियाद किये । परंतु गाँव के लोग गायकवाड के आदमियों को लांच देकर अपनी तरफ कर लिये थे । इससे वे वोले हे कला ! यदि तेरी जमीन हो तो अपने हाथ में आग का लोगा लो, तूं जलेगा नही तो तुझे जमीन दिलवा दूँगा'' । पहले के जमाने में ऐसी परीक्षा की जाती थी । हाथ जलेगा तो वस्तु वापस नही दीजायेगी ।

''पण लोंटे लांच भरी तियां तेणे करी राये न कर्यो निया ।
कहे कला वात चित धरो, मारा धर्म न्याय कोई करो ॥
त्यारे सहुए वात एम झाली, साचा सम खाडले तुं चाली ।
पछी एज कीदो निरधार समरवाधा विना नही पार ॥
(भक्तचिंतामणी १३७/११-१२)

श्रीजी महाराज को प्रार्थना करके कला भगत गायकवाड से कहा ''मेरी ताकत है कि मैं ऐसा सौगंधलेता हूँ, अग्नि का गोला अपने हाथ में लेता है और श्रीजी महाराज की प्रार्थना करने लगता है –

''क्यो हपावी लोहगोलो लाल, कहे साचो होतो लई चाल ।
जोई कलो कहे छे विचार, प्रभु केम उतारशो पार ॥
मारे एक आघाट तमारो, वाला आ समे रखे विसारो ।
एम कहेतां आव्या भगवान दिधां दासने दर्शन दान ॥''
(भक्तचिंतामणी १३७/१४-१५)

हे हरि ! मेरी लाज रखना । इस कसौटी में से हमें कैसे पार उतारेंगे ? आप ही हमारे एकमात्र आधार हैं । यह सुनकर उसी समय दिव्यरुपधारण करके भगवान ने दर्शन दिया और कहा कि भक्तराज ! धंधकते गोले को अपने हाथ में ले लो, कोई तकलीफ नहीं होगी ।

''आवी बोल्या एक अविनाश, कहे रहे निर्भय तुं दास ।
बीक तजी गोलोले बे हाथ, नहिं दाझय कहे एम नाथ ॥''
(भक्तचिंतामणी १३७/१६)

इसके बाद कला भगत ''स्वामिनारायण ..... स्वामिनारायण'' इस तरह भजन करते हुए उस गरम गोले को हाथ में उठा लिये और उस गोले को लेकर पूरे खेत में घूमे – फिर भी हाथ जला नही । यह देखकर गायकवाडने कहा कि कला भगत सच्चे हैं यह जमीन भी इन्ही की है । पूरे गाँव के लोग आपसमें बात करने लगे ''यह कला स्वामिनारायण का सच्चा भक्त है । इसकी रक्षा स्वयं भगवान ने किया है । पूरे गांव में भगवान स्वामिनारायण की तथा कला भगत की जयजयकार होने लगी । भगवान की जो शरणागति स्वीकार कर लेता है उसकी रक्षा भगवान हर तरह से करते हैं । जहाँ पर यह परीक्षण हुआ था वहाँ पर स्मारक बना हुआ है । गोला श्री स्वामिनारायण म्युजियम के ९ नं. हाल में रखा गया है । खेत में जो कूंआ था उसके उपर पत्थर रखकर महाराज स्नान किये थे उस पत्थर को चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पीछेवाली दीवाल में फिट कर दिया गया है ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिरमें श्री नरनारायणदेव के केशर स्नान अभिषेक के दर्शन

श्री नरनारायदेव का वैशाख शुक्ल पक्ष-अक्षयतृतीया से परंपरागत चंदन के वस्त्रों का दर्शन डेढ़ महीने तक करवाये जाते हैं । चंदन के वस्त्रो में भिन्न भिन्न लेस-नंग तथा डिझाईन इस प्रकार की जाती है मानो भगवान कपड़ो की मखमल के वस्त्रो के रुप में धारण किये हो । ऐसा अलौकिक दर्शन । जिसकी कभी तृप्ति नही हो सकती है । ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष १५ को प्रातः ६-३० बजे तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से षोडशोपचार पूर्वक केशर स्नान विधिपूर्वक किया गया । आज के केशर स्नान के यजमान प.भ. प्रकाशभाई लालभाई (उनावा) का परिवार था ।

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के पुजारी स्वा. राजेश्वरानंदजी के मार्गदर्शन प्रेरणा से पार्षद घनश्याम भगत (गढपुर), श्री लाभशंकरभाई, पुजारी स्वामी अनंतानंद, पुजारी स्वामी मुकुदानंद आदि संतोने ठाकुरजी की चंदन के वस्त्रो से सेवा की थी। (शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

ईडर मंदिर का १६८ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से ईडर श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का १६८ वाँ पाटोत्सव मनाया गया ।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-९ सुबह ७-०० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से वैदिक विधिपूर्वक ठाकुरजी का अभिषेक सम्पन्न हुआ । लालोडा मंदिर के स्वामी विश्वप्रकाशदासजी तथा स्वामी बालकृष्णदासजी की प्रेरणा से विश्वप्रकाशदाजी तथा स्वामी बालकृष्णदासजी की प्रेरणा से प.भ. दवजीभाई सांकाभाई पटेल, सुपुत्र संजय तथा जनक आदि परिवारने पाटोत्सव के यजमान पद पर रहकर प.पू. महाराजश्रीका पूजन आरती करके आशीर्वाद लिये । विशाल सभा में पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) पू. रघुवीर स्वामी (सोकली), शा. हरिजीवनदास (हिंमतनगर), माणसा, अहमदाबाद, नारायणघाट, लालोडा, प्रांतिज आदि स्थानों से पधारे संतो ने प्रासंगिक प्रवचन किये । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार तथा समस्त सभा को आशीर्वाद दिये ।

समग्र प्रसंग में कोठारी एस.एस. स्वामी, शा. वासुदेव स्वामी, कूंज स्वामी, शा. श्रीजीप्रकाशदास तथा पू. अजय स्वामीने सुंदर सेवा की । सभा संचालन शा. प्रेमप्रकाशदासने किया । प.पू. महाराजश्री के आशीर्वाद से मंदिर में सुवर्ण सिंहासन के लिए हरिभक्तोने सुंदर सेवा की ।(कोठारी सत्यसंकल्प स्वामी, ईडर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु राणीप प्रथम पाटोत्सव

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण न्यु राणीप में बिराजमान सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव आदि देवों का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव ता. ३१-५-१४ को मनाया गया ।

प्रातः ठाकुरजी का अभिषेक स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री), तथा स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी तथा यजमानश्री अशोकभाई जे. पटेल आदि परिवारने किया ।

अन्नकूट का लाभ प.भ. बलदेवभाई कचरदास पटेल तथा ध्वजा के यजमान पदका लाभ प.भ. मुकेशभाई जोईताराम पटेलने लिया । संतो के पूजा के यजमान प.भ. प्रकाशभाई पुरुषोत्तमदास पटेल, महापूजा के यजमान प.भ. प्रविणकुमार विष्णुभाई पटेल थे । छप्पन भोग अन्नकूट आरती में यजमानोंने संतो के साथ भाग लिया । महापूजा की पूर्णाहुति कालुपुर मंदिर के महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट मंदिर के महंत स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी, शा. स्वा. छपैयाप्रसाददासजी, तथा शा. स्वा. आनंदजीवनदासजी तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की ।(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - प्रयाग पटेल)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष में निम्नलिखित गाँवो में हुई सत्संग सभा

नवावाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग सभा

ता. १-५-१४ को स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज में साम ६ से ८ तक श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा सत्संग सभा हुई । इस प्रसंग पर नारायणघाट मंदिर के महंत शा. पी.पी. स्वामी तथा शा. राम स्वामी आदि संतमंडलने कथा वार्ता की । (अमित पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर साणंद सत्संग सभा

ता. ३-५-१४ को स्वामिनारायण मंदिर साणंद में

सत्संग सभा हुई . जिस में शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) तथा शा. दिव्यप्रकाशदासने हरिभक्तों को कथा का पान करवाया। (जे.डी. ठक्कर)

वागोसणा गाँव में सत्संग सभा

ता. २९-५-१४ को वागोसणा गाँव में शा. पी.पी. स्वामी तथा शा. चैतन्य स्वामीने (नारायणघाट) कथा-वार्ता करके हरिभक्तों को आनंदित किया । सोजा श्री नरनारायणदेवय युवक मंडलने कीर्तन-भक्ति द्वारा सभी को प्रसन्न किया। (प्रहलादभाई पटेल, राजुभाई पटेल)

आजोल (माणसा) गाँव में सत्संग सभा

ता. ३१-५-१४ को महाप्रतापी श्री हनुमानजी महाराज की पावन सानिध्य में सत्संग सभा का आयोजन किया था। प्रथम श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा कीर्तन भक्ति के बाद स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) शा. स्वा. रामकृष्णदासजी तथा शा. चैतन्य स्वामीने सर्वोपरि श्रीहरि की कथा की। समग्र प्रसंग में भी विष्णुभाई, श्री सुरेशभाई, श्री के.डी. पटेल, श्री जे.डी. पटेल आदिने अहमदावाद से सुंदर व्यवस्था की थी। (कमलेशभाई आजोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु राणीप में सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रथम सत्संग सभा में ता. १-६-१४ रविवार को १-३० से ११-३० तक हुई । प्रथम श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून, बाद में कालुपुर तथा नारायणघाट मंदिर के संत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर), शा. स्वा. आनंदजीवनदासजी, शा. स्वा. छपैयाप्रसाददासजी तथा शा. स्वा. हरिजीवनदासजीने कथा की। (शा. दिव्यप्रकादासजी, नारायणघाट)

बोरु गाँव में सत्संग सभा

ता. ५-६-१४ को बोरु गाँव में सत्संग सभा हुई। संतो में शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री), शा. राम स्वामी (कोटेश्वर) आदि संत मंडलने कथा की थी । श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने (सोजा) कीर्तन-भक्ति की।

(हरपालसिंह)

देवुबा गांव में सत्संग सभा

ता. ८-६-१४ को दरबारी गांव देवुबा में श्रीनरनारायणदेव युवक मंडलने (सोजा के दरबार भक्तों द्वारा) गाँव के अंबाजी माता के चोक में सुंदर सभा का आयोजन किया। जिस में शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) तथा शा. राम स्वामी आदि संतोने भगवान की कथा की।

(विपुल पटेल सोजा)

महादेवनगर जडेश्वर में १९ वाँ पाटोत्सव तथा भव्य सत्संग सभा का आयोजन

श्री स्वामिनारायण मंदिर जडेश्वर पार्क महादेवनगर १९ वाँ वार्षिक पाटोत्व प्रसंग पर ता. २८-५-१४ को भव्य सत्संग सभा की। हरिभक्तों ने पाटोत्सव में यजमान पद का लाभ लिया। बाद में ठाकुरजी की आरती की गयी।

समग्र आयोजन प.भ. हरेशभाई तथा प.भ. विनोदभाई की तरफ से वस्त्राल रोड, उत्सव सी.टी. फ्लेट में हुआ । २००० के आसपास हरिभक्तोने कथा-वार्ता का लाभ लिया। संतो में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णजीवनदासजी, शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट), शा. आनंद स्वामी (महादेवनगर), शा. राम स्वामी आदि संतोने कथा-वार्ता का लाभ दिया । अन्य संतो में शा. छपैयाप्रसाद स्वामी, नीलकंठ स्वामी तथा कूंज स्वामी भी उपस्थित थे। श्री पूरव पटेल इत्यादि कलाकारोंने कीर्तन भक्ति की, सभा में संतो ने श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव की घोषणा की । समग्र महिला मंडल तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर)ने किया था। (कोठारीश्री महादेवनगर मंदिर)

सरढव गाँव में सत्संग सभा

सरढव (गांधीनगर) गाँव में भव्य सत्संग सभा हुई। जिस मं शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) तथा शा. राम स्वामी तथा शा. व्रजवल्लभ स्वामी (मूळी)ने कथा की। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा कीर्तन भक्ति की गयी।

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर

ऐतिहासिक तथा पौराणिक वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज ने वैशाख शुक्ल पक्ष-३ से ज्येष्ठ शुक्लपक्ष-१४ तक चंदन का सुशोभित वस्त्रो के दर्शन मंदिर के कोठारी शा.स्वा. विश्वप्रकादासजी तथा पू. स्वा. धर्मविहारीदासजी गुरु शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने डेढ महीने तक हरिभक्तो को अलौकिक सुख दिया । ज्येष्ठ शुक्लपक्ष-१५ को श्री घनश्याम महाराज को केशर स्नान करवाया। इस प्रसंग पर पू. महंत स्वामीने हरिभक्तों की सेवा की प्रशंसा की।

(कालीदास जे. पटेल, वडनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया सत्संग शिबिर

प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्रीहरि के चरणों से अंकित पवित्र तीर्थभूमि श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में ता. ९-६-१४ रविवार को श्री नरनारायणदेव युक मंडल द्वारा कांकरिया द्वारा प.पू.

लालजी महारजाश्री की शुभ अध्यक्ष स्थान पर शिबिर का आयोजन किया गया । महंत स.गु. स्वा. गुरुप्रसाददासजी तथा स.गु. आनंद स्वामीने सुंदर व्यवस्था की ।

कांकरिया, अमदावाद, जेतलपुर तथा एप्रोच, बापुनगर के संतोने सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की निष्ठा रखने की बात कही । अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी भक्तों को श्री नरनारायणदेव की भक्ति रखने को कहा।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, कांकरिया)

श्री नरनारायणदेव महिला मंडल राणीप

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव महिला मंडल (राणीप) श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के निमित्त पर २०० सत्संग सभा की गयी । प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री के ४२ वें प्रागट्योत्सव के निमित्त ४२ सत्संग सभा की गयी । (राणीप श्री नरनारायणदेव महिला मंडल)

हर्षद कोलोनी (बापुनगर) मंदिर

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवाला की आज्ञा तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री के शुभ आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१० को सर्वोपरि श्रीहरि के अंतर्ध्यान तिथि के अवसर पर प्रातः ७ से साम के ७ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून बहनो द्वारा की गयी । (गोरधनभाई सीतापरा)

अलौलिक तीर्थभूमि बड़ी आदरज श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वितीय पाटोत्सव तथा कथा पारायण

श्री स्वामिनारायण भगवानने जहाँ अनेक लीला-किये थे ऐसी भूमि आदरज श्री स्वामिनारायण मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा स.गु. स्वा. रामकृष्णदासजी की प्रेरणा से धूमधाम से मनाया गया ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. २१-५-१४ से ता. २५-५-१४ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ अंतर्गत दंढाव्य प्रदेश के लीला चरित्र का पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने तथा सहिंता पाठ के वक्ता सगु. स्वा. बालस्वरुपदासजी (मूळी) ने किया । बहनो को आशीर्वाद देने हेतु ता. २५-४-१४ को प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री पधारी थी । ता. २५-५-१४ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी के पाटोत्सव की आरती करके । प.पू. बड़े महाराजश्री सभा में बिराजे । पाटोत्सव के यजमान स.गु. स्वा. राजेन्द्रप्रसादजी की प्रेरणा से बने थे । सभा संचालन शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट) ने किया । (कोठारीश्री, बड़े आदरज)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४२ वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में बालवा गाँव में विभिन्न प्रवृत्ति की गयी

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कलोल में ४२ वें जन्मोत्सव पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा युवान भक्तों द्वारा १२ घंटे की महामंत्र धून, सामाजिक सेवा के संदर्भ में कुतो को खिचडी तथा रोटी बनाकर बांटी गयी । यह प्रवृत्ति सात महीने से (प्रत्येक शनिवार) को चल रही है । श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उलक्रम में होस्पिटल द्वारा आयोजित सर्वरोग निदान केम्प का भी आयोजन किया गया ।

(कोठारी श्री रमणभाई चौधरी)

लुणावाडा गाँव में भव्य सत्संग सभा

प.पू. आचार्य महाजाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. संतो प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ता. १५-६-१४ को श्री स्वामिनारायण मंदिर कडीयावाड में सत्संग सभा हुई ।

हरिभक्तों की विशाल सभा में शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी स्वा. वासुदेवचरणदासजी, शा. कुंजविहारीदास तथा माधव स्वामीने कथावार्ता की । श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव की समग्र जानकारी संतोने दी । (कोठारीश्री, लुणावाडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा १४४ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजाश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा का १४४ वाँ पाटोत्सव मनाया गया ।

पाटोत्सव के यजमान वाघेला शणगारभाई दिपसिंह माधुसिंह का परिवार का वैशाख शुक्लपक्ष-८ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । श्री राधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक वेद विधिसे किया गया । उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभा में पधारे ।

प्रासंगिक सभा में पू. शा.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर)ने माणसा के देव के महिमा के साथ श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव की रुपरेखा कही ।

<u>सत्संग सभा</u>

ता. ८-६-१४ को आगामी श्री नरनारयणदेव महामहोत्सव तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४२ वाँ प्राकट्योत्सव के सुंदर सत्संग सभा का आयोजन किया गया।

जिस में शा. घनश्याम स्वामीने कथावार्ता करके महोत्सव की रुपरेखा बताई । सभा के मुख्य यजमान प.भ. नारायणभाई ईश्वरभाई पटेल थे । कोठारी चंद्रप्रकाश स्वामी तथा पुजारी प्रेम स्वामीने प्रेरणात्मक सेवा की । ज्येष्ठ शुक्लपक्ष-१५ प्रातः ६-३० से ७-०० बजे ठाकुरजी का केशर स्नान दर्शन हरिभक्तों को करवाया गया ।

(पूजारी प्रेमस्वरुपदास)

मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) भात

प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा. आत्मप्रकासदासजी तथा सगु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से भात मंदिरके महंत शा. पुरुषोत्तम स्वामी (दास स्वामी) की मेहनत से श्रीजी महाराज के चरणकमल से अंकित भात गाँव के स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का (नरनारायणदेव पीठ का) में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. ८-५-१४ से ता. १२-५-१४ तक धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत पंचाह पारायण का आयोजन किया गया । जिसके वक्ता पद पर स.गु. शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी गुरु स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) ने कथामृत पान करवाया गया । प्रथम दिन का प्रारंभ प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया । कथा प्रसंग में ता. १०-५-१४ को प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे ।

बहनो की गुरु अ.सौ. पू. बड़ी गादीवालाश्री पधारकर बहनो को आशीर्वाद दिये । इस प्रसंग पर भव्य महाविष्णुयाग का भी आयोजन किया गया । ता. ११-५-१४ शाम को भव्य ठाकुरजी की नगरयात्राका आयोजन किया । गाँव के सभी भक्तोंने भाग लिया । ता. १२-५ को प.पू. आचार्य महाराजश्री भात गाँव में पधारे तब शोभायात्रा में भी सभी उपस्थित थे । प्रथम बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करके प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । जिस में स्वामिनारायण भगवान की १५० वर्ष पुरानी मूर्तियों की प्रतिष्ठा करके, आरती की गयी । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने मूर्तिओं की फोटोग्राफी की । उसकेबाद सभा में प.पू .आचार्य महाराजश्री पधारे थे। समस्त धर्मकुल की तथा संतो की आरती करके गाँवालोने सन्मान किया । अंत में पू. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद दिये । सां.यो. बहने भी पधारी थी । समग्र महोत्सव का संचालन शा.स्वा. दास स्वामी (भातवाले)ने किया ।

(दास स्वामी भात)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महिज पाटोत्सव

प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा. आत्मप्रकासदासजी तथा सगु. शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से महिज में बिराजमान भगवान स्वामिनारायण आदि देवो का पाटोत्सव ता. ८-६-१४ रविवार को धूमधाम से मनाया गया । षोडशोपचार से ठाकुरजी की महापूजा, अभिषेक संतो तथा यजमानों द्वारा किया गया । जेतलपुर से तपोमूर्ति स.गु. श्यामचरणदासजी, स्वा. भक्तिवल्लभ स्वामी, शा. भक्तिनंदन स्वामी, कलोल से स.गु.स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने कथावार्ता की ।

(महंत के.पी. स्वामी जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा गाँव पाटोत्सव

प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवमं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा. आत्मप्रकासदासजी तथा स.गु. शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी गुरु स.गु. ज्ञानप्रकाशदासजी (पूजारी राम स्वामी) की प्रेरणा से मंदिर में बिराजमान भगवान स्वामिनारायण, आदि देवो की वार्षिक प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव ता. १९-५-१४ को धूमधाम से मनाया । षोडशोपचार से ठाकुरजी का महाभिषेक किया गया । सत्संग सभा में स.गु.शा.पी.पी. स्वामी, स्वामी श्यामचरणदासजी, शा. भक्तिवल्लभ स्वामी, वी.पी. स्वामी, आदि संतोने कथावार्ता की ।

(शा. भक्तिनंदन स्वामी जेतलपुर)

लाडपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव मनाया

प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवमं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से गाँव लाडपुर में बिराजमान भगवान स्वामिनारायण आदि देवो का पाटोत्सव ता. १३-५-१४ मंगलवार को धूमधाम से मनाया गया । षोडशोपचार से ठाकुरजी की महापूजा, अभिषेक, संतो तथा यजमानो द्वारा किया गया । सत्संग सभा में जेतलपुर से शा. भक्तिनंदन स्वामी । कलोल से स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी, कांकरिया से यज्ञप्रकाशदासजीने कथावार्ता की ।

(महंत के.पी. स्वामी, जेतलपुर)

मेरानी मुवाडी श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव मनाया

प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवमं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से मेरानी मुवाडी मंदिर का पाटोत्सव ता. १३-५-१४ को धूमधाम से मनाया गया । षोडशोपचार से ठाकुरजी की महापूजा, अभिषेक संतो तथा यजमानो द्वारा किया गया । सत्संग सभा में जेतलपुर से सगु. श्यामचरणदासजी, शा. भक्तिवल्लभ स्वामी, स.गु. स्वामी माधवजीवनदासजी आदि संतोने कथावार्ता की। (बिजलभाई - मेरानी मुवाडी:

प.पू. आचार्य महाराजश्री के ४२ वे जन्मोत्सव के उपलक्ष में भव्य पदयात्रा का आयोजन

प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवमं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प.पू. आचार्य महाराजश्री का ४२ वे जन्मोत्सव तथा गादीभिषेक महोत्सव के उपलक्ष में बाटडी-ट्रेन्ट-सीतापुर-मांडल विस्तार के हरिभक्तो द्वारा भव्य पदयात्रा का आयोजन ता. ४-५-१४ को पाटडी-ट्रेन्ट से जेतलपुर तक (पांच दिन तक, किया गया) जिस में पदयात्रा जहाँ-जहाँ मुकाम, विश्राम करे वहाँ वहाँ श्रीमद् सत्संगिजीवन ग्रंथ की कथा विविधवक्ताश्री द्वारा की गयी । इस पदयात्रा में पाटडी के सां.यो. शान्ताबाई तथा शिष्य मंडल की प्रेरणा से बडी संख्या में भक्तोने भाग लिया । कथा पूर्णाहुति प.पू. बड़े महाराजश्रीने की । यजमान पद का लाभ प.भ. विष्णुभाई गोविंदभाई पटेल ट्रेन्टवाले ने लिया । धर्मकुल पूजन का लाभ प.भ. प्रभुभाई त्रिभोवनभाई पटेल ट्रेन्टवाले ने किया । पदयात्रा में दैनिक रसोई के यजमान पद का लाभ भी लिया । पदयात्रा की पूर्णाहुति ता. ९-५-१४ जेतलपुर में हुई । विशाल सभा में स.गु. महंत आत्मप्रकाशदासजी आदि संतोने आशीर्वाद दिये। (कोठारी नारणभाई - पाटडी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर राबड़ीया प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव मनाया

प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवमं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर राबड़ीया की वार्षिक प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव ता. ८-५-१४ को धूमधाम से मनाया गया । षोडशोपचार से हरिकृष्ण महाराजकी महापूजा की गयी । जेतलपुर से पधारे स.गु.शा.स्वा. पी.पी. स्वामी द्वारा भगवान के वेदोक्तविधिसे अभिषेक करवाया गया । इस प्रसंग पर महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी, शा. भक्तिनंदन स्वामी, कांकरिया से यज्ञप्रकाश स्वामीने सभा में प्रेरक प्रवचन किया ।

(डॉ. हर्षदभाई के भगत अमदावाद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयों तथा बहनो का) डुमाणा गाँव में पाटोत्सव

प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवमं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से डुमाणा मंदिर में भाइयों तथा बहनो के मंदिर में बिराजमान भगवान स्वामिनारायण, आदि देवों का वार्षिक प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव ता. ३०-४-१४ बुदवार को धूमधाम से मनाया गया । ठाकुरजी का षोडशोपचार, महापूजा संतो-यजमानोने की । जेतलपुर से स.गु. शा. वी.पी. स्वामी आदि संतोने कथावार्ता की। (कोठारी नविनभाई - डुमाणा)

मोटप गाँव में प्रतिष्ठा तिथि महोत्सव मनाया गया

प.पू. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवमं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के महंत स्वामी शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से भगवान स्वामिनारायण, आदि देवो का पाटोत्सव धूमधाम से ता. ४-५-१४ रविवार को मनाया गया । ठाकुरजी की महापूजा संतो-यजमानोने की । मेहसाणा मंदिर से महंत स्वमी नारायणप्रसाददासजी, महंत शा. उत्तमप्रियदासजी, शा. हरिप्रियदासजीने कथावार्ता की ।

जेतलपुर मंदिर (बहनों का) में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से जेतलपुर में रामानंद स्वामी द्वारा प्रतिष्ठित प्रसादी के राधाकृष्णदेव की मूर्ति प्रतिष्ठा ता. २२-६-१४ को नूतन महिला मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों धूमधाम से संपन्न की गई थी । प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से सत्संग कराने वाली सां.यो. बचीबा, तथा सां.यो. नर्मदाबा तथा उनकी

शिष्य मंडल द्वारा बहनो का सत्संग मंडल उत्तरोत्तर बढते रहने से मंदिर छोटा पड़ने लगा था इस लिये प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नूतन मंदिर का निर्माण कार्य महंत स्वामी की प्रेरणा से तथा सभी हरिभक्तों के सहयोग से संपन्न हुआ था। जिससे हवेली का भी कार्य सुंदर ढंग से हो गया। जिस में गंगा मां के प्रसादी के राधाकृष्ण देव विराजमान है। ता. २०-६-१४ को प्रतिष्ठा महोत्सव के अन्तर्गत महाविष्णुयाग का आयोजन किया गया था। ता. २२-६-१४ को प्रथम प्रतिष्ठा विधी की गयी थी। नूतन हवेली में प्रतिष्ठा के अवसर पर इतनी भीड़ हो गई की जैसे श्री रेवती बलदेव हरिकृष्ण महाराज की प्रतिष्ठा हो। प्रत्येक धाम से करीब ५१ संत पधारे थे. सभा मंडप भी खचोखच भरा हुआ था। संतो के प्रवचन के बाद हवेली निर्माण में सेवा करने वाले तथा मुख्य गेट, नूतन निवास के निर्माण कार्य, नूतन संतनिवास की सेवा करने वालों को प.पू. आचार्य महाराजश्री ने अपने हाथों से बलदेवजी महाराज के प्रसादी के वस्त्र भेंट में दिया था। जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी भावविभोर होकर सेवा करने वाले भक्तों का आभार व्यक्त किया था। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इसके बाद आगन्तुक सभी भक्तजन प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये थे। प्रतिष्ठा महोत्सव में सेवा करने वाले सभी के सेवा की प्रशंसा की गयी थी।

(महंत के.पी. स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल का ९ वाँ पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. व्रजवल्लभदासजी गुरु स्वा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से वैशाश शुक्ल ७ को बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर के ९ वें पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक किया गया था। श्री जगदीशभाई कालीदास दरजी कृते नीरज दरजी (सादरावाला) के यजमान पद पर अन्नकूट की आरती प.पू. लालजी महाराजश्रीने किया था।

प्रासंगिक सभा में सत्यस्वरुप स्वामी, व्रज स्वामी, राम स्वामी (कोटेश्वर), अभय स्वामी (नारायणघाट), शांति स्वामी, योगी स्वामी, धर्मप्रर्तक स्वामीने उद्बोधन किया था। अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर प.भ. अमृतभाई कोठारी, भरत भगत, श्री राजुभाई, श्री अरविंदभाई, श्री नवीनभाई तथा महादेवभाई सेवा में लगे थे। यहाँ पर चैत्र शुक्ल-९ को श्रीहरि का प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था। (प्रवीणभाई उपाध्याय)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से नूतन यात्रिक भवन का खात पूजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से तथा मूली मंदिर के महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से मूली मंदिर में आधुनिक ''श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज यात्रिक भवन'' का खात पूजन ता. १३-६-१४ को प्रातः प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से पूजन विधिसम्पन्न हुई थी।

इस प्रसंग पर आयोजित सभा में शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजीने कथामृत पान करवाया था। यहाँ के महंत पी.पी. स्वामी तथा कोठारी कृष्णवल्लभदासजीने प्रसंगोचित उद्बोधन किया था। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सभा संचालन शैलेन्द्रसिहं झाला ने किया था। समग्र प्रसंग की सेवा में व्रज स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी, जे.के. स्वामी, भरत भगत तथा प्रवीण भगत थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर होमात्मक महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी प्रेमजीवदनदासजी की प्रेरणा से वैशाल शुक्ल-३ अक्षयतृतीया से ज्येष्ठ शुक्ल-१४ तक ठाकुरजी को चन्दन से चर्चित करके सभी को दर्शन करवाया गया था। ज्येष्ठ शुक्ल-१५ को होमात्मक महापूजा का भी आयोजन किया गया था। प.पू. बड़े महाराजश्रीने आरती करके महापूजा की पूर्णाहुति की थी। हरिभक्त दर्शन करके धन्यता आ अनुभव कर रहे थे। समग्र आयोजन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजीने किया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष्य में चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा प्रत्येक रविवार को सत्संग सभा होती है। हलवद तालुका के - मयूरनगर, लीलापुर, नीलकंठ नगर, नरनारायणनगर, बुधवार को श्रीनगर, स्वामिनारयण नगर, सुसवाल, गुरुवार को - सूर्यनगर, घनश्यामनगर, भक्तिनगर, तथा हलवद में

प्रत्येक शनिवार को सभा आयोजित होती है । जिस में महंत स्वामी उत्तमप्रियदासजी, कोठारी स्वामी ब्रह्मविहारीदासजी पुजारी मुक्तजीवन स्वामी इत्यादि संत मंडल ने कथा प्रवचन करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया था । (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल चराडवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भराडा (धांगधा)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. ३०-५-१४ को श्री स्वामिनारायण मंदिर भराडा (भाईयों के) में प्रथम पाटोत्सव संपन्न हुआ । इस प्रसंग पर स्वा. नारायणप्रसाददासजी (मूली) के शिष्य शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजीने श्री नरनारायणदेव तथा मूली के हरिकृष्ण महाराज का महत्व समझाया था । कोठारी भीखाभाई तथा चमनभाईने प्रेरणात्मक सेवा की थी ।

(प्रति. अनिल वी. दुधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ओलपाड

ओलपाड में मूली देश के हरिभक्त स्थाई हुए हैं । जो अहमदाबाद तथा वडताल देश के गादी के निष्ठावाले हैं । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ मंदिर के १९ वें पाटोत्सव के प्रसंग पर स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत पुरुषोत्तमप्रकाश ग्रंथ की कथा शांति भगत ने की थी । इस प्रसंग पर मूलीधाम के संत पधारे हुए थे । सभीने यथोचित प्रवचन किया था । ठाकुरजी का पाटोत्सव - अन्नकूट की आरती के बाद प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किया था । (विवेकभाई वरु, ओलपाड)

सर्वजीव हितावह महोत्सव - जीरागढ-२०१४

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से तथा जीरागढ के भक्तों के सहयोग से प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी निर्माणाधीन मंदिर के उपलक्ष्य में सर्वजीव हितावह महोत्व ता. ११-५-१४ से ता. १५-५-१४ तक रोकडिया हनुमानजी महाराजके सानिध्य में धूमधाम से मनाया गया था । इस उपलक्ष्य में पंच दिनात्मक सत्संगिजीवन कथा का आयौजन किया गया था । जिसके वक्ता जमीयतपुरा मंदिर के महंत घनश्याम स्वामी थे । अखंड धुन का भी आयोजन किया गया था । ता. १५-५-१४ को प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । उनके स्वागत में सभी खड़े थे । महाराजश्री हनुमानजी का दर्शन करके आरती उतारकर नूतन जीरागढ में ४२ घरो में पदार्पण किये थे । इसके बाद सभा में महाराजश्री के वरद हाथों कथा की पूर्णाहुति की गयी थी । अनेक स्थानों से संत पधारे हुए थे । प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । कथा के यजमान का सन्मान किया गया था । अन्त में सभी प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये थे । नूतन मंदिर तथा समग्र महोत्सव का आयोजन करनेवाले शा. नारायणप्रसाददासजी तथा शिष्य मंडल तथा यहाँ के हरिभक्तों की महाराजने खूब प्रशंसा की थी । स्वयं सेवकों की सेवा की भी प्रशंसा किये थे ।

(शा. आत्मप्रकाशदासजी, सायला गुरुकुल)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर का २७ वाँ पाटोत्सव

आई.एस.एस.ओ. में सर्व प्रथम निर्माण हुए श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन न्युजर्सी का २७ वाँ पाटोत्सव २१ मई से २४ मई तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर सभा में पू. बिन्दुराजा, श्री सौम्यकुमार, श्री सुव्रतकुमार तथा प.पू. महाराजश्री के साथ पधारे हुए पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) पार्षद वनराज भगत तथा प्रत्येक चेप्टर के महंत इस अवसर पर उपस्थित थे । इस प्रसंग पर शा. विश्ववल्लभदासजी के वक्तापद पर श्रीहरि के ऐश्वर्य दर्शन पर तीन दिन तक कथा हुई थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था ।

केइक कटींग सेरीमनी में प.पू. आचार्य महाराजश्री, पू. बिन्दुराजा, श्री सौम्यकुमार, श्री सुव्रतकुमार साथ में थे । सभी भक्त प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे । अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद देते हुए बताया कि मंदिर का २७ वर्ष पूर्ण हुआ इससे आपसमें सभी के प्रेम का प्रतिफल है जो सभी एक दूसरे से जुडे हुए हैं । माहात्म्य के साथ भगवान की भजन करते रहियेगा । आप सभी सत्संग की वृद्धि करते रहे, धर्म, नियम, का पालन करते रहे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

(प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के कोलोनिया मंदिर में रविवार को सायंकाल निर्जला एकादशी के निमित्त सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में महंत स्वामी धर्मकिशोरदासजी तथा शा. नरनारायणदासजी तथा हरिभक्त मिलकर धुनकीर्तन किये थे । श्रीहरि के अन्तर्ध्यान तिथि ज्येष्ठ शुक्ल-१० तथा निर्जला एकादशी की कथा की गयी थी । महंत स्वामीने आगामी मास में प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में संपन्न होने वाले केम्प के विषय में जानकारी दी थी । अन्त में सभी आरती तथा एकादशी के पद बोलकर सभा को विसर्जित किये थे ।

(महंत स्वामी कोलोनिया)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

अमदावाद (मूल मोरवासण गाँव का) : अमदावाद श्री नरनारायणदेव स्कीम कमेटी बोर्ड के सदस्य तथा श्री नरनराायणदेव के निष्ठावान तथा सेवाभावी धर्मकुल के कृपापात्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम निर्माण करने के समय सेवा करने वाले, जिसके पुत्र आई.एस.एस.ओ. में (जयेशभाई तथा संजयभाई) सक्रिय सेवा करते हैं। ऐसे श्री रसिकभाई अंबालाल पटेल ता. २७-६-१४ को अमेरिका में श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं। इनके दुःखद अवसान से प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री ने श्रीहरि के धाममें सुख प्राप्ति हो तथा परिवारजनों को धैर्य-बल मिले ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना की है।

ह्युस्टन टेक्सास (लसुन्द्रा) : श्री स्वामिनारायणमंदिर के सक्रिय सेवा भावी तथा धर्मकुल के निष्ठावान श्री देवेन्द्रभाई बेचरभाई पटेल (मूल गाँव लसुन्द्रा) इनकी धर्म पत्नी कोकिलाबहन तथा उनकी बहन हंसाबहन तथा श्री जयन्तीभाई अंबाशंकर भट्ट ता. २३-६-१४ को कार अकस्मात् में अक्षरनिवासी हुए हैं। उनके अक्षर निवास से ह्युस्टन के सत्संग में बड़ी कमी हुई है। ऐसे दुःखद समाचार को सुनकर प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री उनकी आत्मा की सांति के लिये श्री नरनारायणदेव के चरणों प्रार्थना किये हैं।

अमदावाद - मेमनगर : प.भ. जयन्तीभाई सोनी (श्री स्वामिनारायण मासिक के लेखक) की धर्मपत्नी अ.सौ. सुशीलाबहन सोनी ता. १४-६-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

अमदावाद - कालुपुर (धनासुथार की पोल) : प.भ. धनश्यामभाई परसोत्तमदास ठक्कर ता. ३०-४-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

धोलका : प.भ. सोनी हसमुखभाई परसोत्तमदास (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल धोलका के प्रणेता) ता. ११-६-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

धांगध्रा : श्री स्वामिनारायण मंदिर के पूर्व पूजारी जितेन्द्र महाराज श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

समो : प.भ. चौदरी वेलजीभाई कचराभाई ता. २९-५-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

घनश्यामनगर (मूली देश) : दलवाडी जशुबहन् मरशीभाई (उम्र. १०७ वर्ष) ता. १-५-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई हैं।

माधवगढ-प्रांतिज : प.भ. दासभाई मरधाभाई पटेल ता. २९-५-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

जीरागढ (मूलीदेश) : प.भ. मूलजीभाई नानजीभाई वरु (उम्र ८० वर्ष) ता. ३१-५-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

लालोडा (ता. ईडर) : प.भ. डॉ. गौतमभाई के. पटेल के पिताजी श्री पटेल करशनभाई (उम्र ९० वर्ष) ता. ११-५-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

प्रतापगढ (बेचराजी) : पटेल पालीबहन त्रिभोवनदास (उम्र ९९ वर्ष) ता. ४-६-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई हैं।

कुडपर (ता. मांडल) : श्री नरनारायणदेव के अडिग निष्ठावाले तथा धर्मकुल के कृपापात्र श्री भगवानभाई शंकरभाई पटेल (उम्र. ९० वर्ष) ता. १२-६-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अमदावाद : श्री नितीन शाह के बड़े भाई प.भ. रजनीकांत बलदेवभाई शाह ता. ७-६-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

नवावाडज : प.भ. सोमाभाई वीरचंददास पटेल (ईटादरावाला) ता. १८-६-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

(१) अपने वोशिंग्टन डी.सी. मंदिर के प्रथम पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री (२) डी.सी. में प.पू. आचार्य महाराजश्री पू. श्रीराजा के जन्मदिन पर कपाल चूमकर आशीर्वाद देते है तथा सभा में पू. बिन्दुराजा तथा पू. लालजी महाराजश्री और चि. सुव्रतकुमार ।

भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की
शुभ उपस्थिति में आगामी सातवी **युवा सत्संग शिबिर**
ता. २८-१०-१४ से ५-११-१४
श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैयाधाम (यु.पी.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा
प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में

प.पू. भावि आचार्य १०८
श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का
१७ वाँ प्राकट्योत्सव

अषाढ कृष्ण-१० ता. २१-७-१४ सोमवार प्रात: ८-१०
स्थल : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद.

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से
(आई.एस.एस.ओ.) श्री स्वामिनारायण मंदिर लुइवील (मूलीधाम) अमेरिका

मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्रीमद् भागवत सप्ताह

प्रारंभ
ता. ११ अगस्त
सोमवार २०१४

पूर्णाहुति
ता. १७ अगस्त
रविवार-२०१४

Jagadish Offset
Praful Kharsani

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू. महाराजश्री तथा सभा में प.पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुये यजमान परिवार ।(२) कांकरिया मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में युवा सत्संग शिबिर ।(३) श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष में न्यु राणीप, दहेगाँव, लुणावाडा तथा मोटेरा में सत्संग सभा में लाभ देते हुए को. जे.के. स्वामी, शा. पी.पी. स्वामी (छोटे), शा. चैतन्य स्वामी, वासुदेव स्वामी, शा. मुनि स्वामी, माधव स्वामी तथा कुंज स्वामी इत्यादि संत ।(४) प.पू. महाराजश्री के ४२ वें जन्मोत्सव प्रसंग पर बालासिनोर, लुणावाडा, कोठंबा मे जेतलपुर के संतो द्वारा महापूजा ।(५) श्री स्वामिनारायण म्युजियम में म्युजियम के प्रति अपनी आत्मबुद्धि का दर्शन कराते हुये प.भ. करशनभाई राधवानी को अपने केमेरे में प.पू. बड़े महाराजश्री क्लीक करते हुये ।